रोमन ग्राश्र

स्तानिस्लाव स्प्रीतोव

पात्र-परिचय

इवान एन्तोनोव : एक साधारण व्यक्ति तथा मकान का मालिक

मार्था : नौजवान युवती । एनानीव एम०ए० की प्रियसी जो बाद में ईवान एन्तोनोव की जीवन साथी बन जाती है ।

एनानीव एम.ए. : पुरातत्व विभाग में शोध कार्य करने वाला एक प्रोफेसर ।

सेकोव : पुरानी ऐतिहासिक वस्तुओं का निर्यात् करने वाला अवैध व्यापारी ।

दायमनदीव : पैत्रिक सम्पत्ति को बेचने और खरीदने का अवैध धंधा करने वाला व्यक्ति ।

गेचेव : स्थानीय संस्था में काम करने वाला व्यक्ति ।

लाइफ गार्ड : रोमन बाथ को सुन्दर ताल बनाए रखने के लिए नियुक्त किया गया एक व्यक्ति ।

इवानोव : एक गूंगा-बहरा ।

प्रोड्यूसर : दूरदर्शन पर कार्यक्रम पेश करने वाला व्यक्ति ।

एक मजदूर : जो बोलता है।

दूसरा मजदूर : जो नहीं बोलता ।

आयोग का सदस्य I }
आयोग का सदस्य II } इन तीनों सदस्यों के समान अधिकार हैं ।
आयोग का सदस्य III }

इनके अतिरिक्त दो कैमरामैन, एक फ्लोर मैनेजर, दो लाइट्समैन तथा एक-दो सड़क पर चलने वाले तमाशबीन ।

दृश्य : एक

[सड़क के किनारे टैक्सी बुलाने का एक कौलम (**प्रसाधन-यन्त्र**) बना है। ईवान एन्तोनोव बुलाने की घण्टी गुस्से में दबा रहा है। निःसन्देह वह ऐसा बहुत देर से कर रहा है—बिना किसी नतीजे के। कौलम के पास ही एक सूटकेस और एक बैग रखा है। बैग से बाहर एक चप्पलों का जोड़ा लटक रहा है। ईवान एन्तोनोव समुद्र के किनारे सैर के लिए जा रहा है। उसे भयंकर देर हो चुकी है जिसके कारण भयंकर परिणामों का तांता शुरू होता है]

ईवान एन्तोनोव : हेलो—हेलो—टैक्सी। क्या मुझे कोई टैक्सी नहीं भेजेगा ?···अपनी जुबान से कुछ तो बोलो···हेलो···(**जोर से मुक्का कौलम पर मारता है जिसे कौलम सह लेता है। कौलम चुप है—बिलकुल बेजुबान।**

हैलो···आधे घण्टे से मैं 'हेलो' चीख रहा हूँ और कोई जवाब नहीं देता। हर काम गलत हो रहा है···सब कुछ उल्टा-सीधा हो रहा

है।···और यह सब हो रहा है इस कौलम की वजह से।

(कौलम को लात मारता है। कोई नतीजा नहीं—केवल उसकी अपनी लात में चोट आती है। और अधिक गुस्सा आता है। कौलम को और भी लात मारने लगता है, गालियां निकालता है)

तू बेवकूफ— निकम्मे—टीन के पुते हुए डिब्बे। हरामजादे, तू···

कोलम : (अचानक बोल पड़ता है) ऐ—देखो। दूसरों की माँ पर छींटाकशी करना बन्द करो। तुम जानते हो तुम कहाँ पर हो ?

ईवान एन्तोनोव : हेलो···आखिरकार ! मेहरबानी करके एक टैक्सी भेज दो, जितनी जल्दी तुम भेज सकते हो, भेज दो।

कौलम : शर्त रही, जो हम भेजें। तुम हमें गालियाँ निकालते हो और फिर उम्मीद रखते हो कि हम तुम्हें टैक्सी भेजें।

ईवान एन्तोनोव : मेहरबानी करो ! मैं आधे घण्टे से हेलो चिल्ला रहा हूं और किसी ने जवाब नहीं दिया।

कौलम : हम सुन रहे थे, बहरे नहीं थे।

ईवान एन्तोनोव : मैं परेशान हो गया था और···

कौलम : तुम परेशान हो गए थे ! अगर तुम्हारे कोई लात मारे, पसन्द करोगे ?

ईवान एन्तोनोव : कामरेड ! कामरेड ! टैक्सी भेज दो ! मैं लेट हो जाऊंगा, जहाज उड़ जायेगा···

कौलम : हम तुम्हारे कामरेड नहीं हैं। जब तुम्हें ठीक

से बात करने का सलीका आ जायेगा हम टैक्सी भेज देंगे।

ईवान एन्तोनोव : (**अनायास ही कौलम को प्यार करने लगता है**) मैं तुमसे माफी मांगता हूं। मेरा मकसद तुम्हारी बेइज्जती करना नहीं था। मुझे जरा जल्दी गुस्सा आ जाता है।...

कौलम : गुस्सा सबको आता है लेकिन सभी टैक्सी में सफर नहीं करते !

[ईवान एन्तोनोव कौलम को सीने से लगाता है और अपने गालों को कौलम की मुलायम सतह पर रगड़ता है]

ईवान एन्तोनोव : मुझे माफ कर दो ! यह मेरी गलती है। मुझे अभी टैक्सी भेज दो, मैं बहुत लेट हो गया हूं। मुझे आज आखिरी जहाज पकड़ना है। मैं वायदा करता हूं, आइन्दा ऐसा नहीं करूंगा।

कौलम : वायदे साबुन के बुलबुलों की तरह होते हैं जो तोड़ने के लिये ही बनाए जाते हैं !

ईवान एन्तोनोव : (**अपनी घड़ी देखता है, कौलम के ऊपर लगभग चढ़-सा जाता है और चिपट कर उसे चूमता है। एक हाथ से प्यार करता है और दूसरे हाथ से रूमाल निकालकर शीशे को साफ करता है**) भइया, मेहरबानी करो ! टैक्सी भेज दो ! भइया...

कौलम : हम तुम्हारे भाई नहीं हैं। बद्दिमागों के भाई नहीं होते !

ईवान एन्तोनोव : (**दोनों हाथ जोड़ते हुए**) मैं तुमसे दरख्वास्त करता हूं ! मेरा टिकट बेकार हो जायेगा।

समुद्र के किनारे घूमने जाने का टिकट बेकार हो जायेगा।

कौलम : हो जाने दो !

ईवान एन्तोनोव : मैं इसके लिए तीन साल से लड़ रहा था। वो हमेशा मुझे जनवरी में छुट्टी देते हैं। और आजकल यहां बिजली की गर्म हवा भी बन्द है। कामरेड···आजकल मेरा साहब बीमार है और इसीलिए मुझे ये पास मिला है। मैं तुमसे दरख्वास्त करता हूं, वह कभी भी ठीक हो सकता है।

[कौलम शान्त है—उसमें से कोई आवाज नहीं आती]

कामरेड—देर से पहुंचने वालों को जगह नहीं मिलती। मेरा टिकट बेकार हो जायेगा। सुन रहे हो, कामरेड ! (**कौलम को पुचकारता है**) मैं यकीन दिलाता हूं, हम अच्छे दोस्त बन जायेंगे ! बीती बातों को भूल जाओ। (**कौलम को पुचकारता है, प्यार करता है, और नरम हाथों से शीशे पर लगी धूल साफ करता है**)

[गेचेव, जोकि एक स्थानीय संगठन का कार्यकर्ता है, पास आकर खड़ा हो जाता है]

गेचेव : हर जगह बदमाशों से भरी हुई है। अब इन्हें ही देखिए, जनाब कौलम के साथ ही लगे हुए हैं। औरतों से पेट नहीं भरता···किसी और जगह होते तो बात दूसरी थी। लेकिन बेटा हमारी ही जगह पर लगे हुए हैं···हमारी

तो बेइज्जती हो जायेगी। (**हिम्मत से आगे बढ़ता है**)

ईवान एन्तोनोव : मैं इसे समुद्र से बधाई भेजूंगा। जो हो गया उसे भूल जाओ। हमें आपस में इन्सानियत का बर्ताव करना चाहिए। (**फिर कौलम चूमता है**)

गेचेव : (**दबी आवाज में**) कामरेड···कामरेड···

ईवान एन्तोनोव : (**यह समझकर कि कौलम बोल रहा है, आवाज को दुहराते हुए**) कामरेड, कामरेड, हां-हां ! (**क्रांतिकारी को देखता है**) ओह, ये क्या ?

गेचेव : तुम किसी दूसरे कौलम पर क्यों नहीं चले जाते ? वहां पर बहुत-सी मुफ्त टैक्सियां हैं।

ईवान एन्तोनोव : (**फौरन अलग हटता हुआ**) हां···क्यों नहीं क्यों नहीं,क्यों नहीं—मैं जाता हूं···(**जाता है**)

गेचेव : और तुम्हारा ये सूटकेस ! यहीं भूले जा रहे हो।

ईवान एन्तोनोव : (**वापस आते हुए**) अरे हां—शुक्रिया। आपका बहुत-बहुत शुक्रिया, कामरेड) **सूटकेस पर लपकता है, दबाता है और भागता है** (बहुत-बहुत शुक्रिया।

गेचेव : किस बात का ? आपकी यात्रा शुभ हो। भगवान आपकी मदद करे। (**उसके जाने की प्रतीक्षा करता है**) अब इसे पड़ोस के कौलम को चूमने दो ! (**जाता है**)

अन्धकार

दृश्य : दो

[ईवान एन्तोनोव के घर में रहने का एक कमरा। किसी समय इस कमरे में एक बड़ा पुस्तक-कक्ष था जिसमें बहुत-सी पुस्तकें भरी रहा करती थीं, और दीवारों पर तस्वीरें टंगी रहती थीं। पीछे हमें एक पुराना ताख दिखलाई पड़ रहा है, जो कि अब टूटा-फूटा-सा है, विभिन्न प्रकार की ह्विस्की की बोतलें, जो कि खाली हैं, रखी हैं। ताख के ऊपर दीवार की घड़ी का एक खोका रक्खा है,और घड़ी कहीं फर्नीचर में दबी पड़ी है। रहने के कमरे के बीच में एक मेज पड़ी रहती थी जो कि बड़ी और सुविधाजनक थी। इसके अतिरिक्त एक बड़ी मेज भी थी जो कि गहरे भूरे रंग की थी। यह अन्य बड़े फर्नीचर की एक अंग थी जिस पर पुस्तकें रखी रहती थीं, कुछ चित्र और नक्शे थे। इस पर कुछ चित्र बनाने वाले कागज और विभिन्न रंगों के पैन और पेंसिल रक्खे हैं। टेलीफोन बड़ी डैस्क पर रक्खा रहता था जिस पर हल्की मध्यम रोशनी का वल्ब जलता रहता था। डैस्क के ऊपर एक गिटार टंगा रहता था। साथ

में दो चमड़े की आराम कुर्सियां, जिस पर मखमली कवर चढ़े रहते थे, थीं। एक मखमली लाल रंग का दीवान था—बहुत सुन्दर। यह सारी चीजें शान्ति और आराम की प्रतीक थीं। अब सब समाप्त।

जब इस कमरे पर पहली बार नजर पड़ती है, कमरे की सारी चीजें उलट-पलट दिखाई देती हैं। हर चीज अपनी जगह से अलग है, बिखरी और टूटी-फूटी अवस्था में। किताबें फर्श पर बिखरी पड़ी हैं,कालीन लपेटा हुआ है, दीवान दीवार के सहारे एक किनारे पर खड़ा है, टेलीफोन कहीं फर्नीचर के बीच में पड़ा है, कम्बल और कुर्सियां सब तराहूपर गट्ठर बने पड़े हैं।

लेकिन इस कमरे में जो महत्वपूर्ण बदलाव दिखलाई देता है वह यह कि इस कमरे के ठीक बीच में एक रोमन बाथ निकला है।

यह एक ताल है जिसकी दीवारें हल्के लाल रंग के संगमरमर की बनी हैं, अंदर रंग-बिरंगे पत्थर जड़े हैं और किनारे-किनारे स्नान करती हुई युवतियों के चित्र बने हैं। फर्श पर तीन-चार स्थानों पर गहरे छेद हैं। ताल के अन्दर एक व्यक्ति रेंगता हुआ कुछ काम करता दिखलाई देता है। विभिन्न सूराखों को लकड़ी के तख्तों से ढांक दिया गया है ताकि लोग उसके ऊपर

पांव रखकर पार कर सकें। पीछे की ओर एक डोला बंधा हुआ है और उस पर सफ़ेद पुते हुए तख्ते लटक रहे हैं।

दूरदर्शन पर एक इन्टरव्यू प्रसारित किया जाने वाला है। चारों तरफ तार ही तार छितरे पड़े हैं, रोमन बाथ की ओर कैमरा अपना मुंह किए खड़े हैं, स्पाट-लाइट्स जल रही हैं, और विभिन्न प्रकार के प्रसारण यन्त्र बिखरे पड़े हैं और प्रोड्यूसर जो कि एक चमड़े की जैकेट पहने हैं, व्यक्तियों को अन्तिम निर्देश दे रहा है]

प्रोड्यूसर : शान्त ! और कोई आवाज मैं सुनना नहीं चाहता। हमारे पास सिर्फ एक मिनट बाकी है। मजदूरों को लाओ।

[प्रबन्धक मजदूरों को लेकर आता है—वे तारों के ऊपर चलते हुए आते हैं, सहमे-सहमे से। एक ने बिल्कुल नई सफेद कमीज सूट के साथ पहनी है और दूसरे ने केवल सफेद कमीज पहनी हुई है। वह निरीह व्यक्तियों की भांति प्रबन्धक के पीछे-पीछे आते हैं]

प्रोड्यूसर : इनमें से एक सफेद कमीज पहने है। एनाउंसर साहब, ये कैसी फिल्म है ?

एनाउंसर : रंगीन।

प्रोड्यूसर : अगर यह रंगीन फिल्म है तो आप इसे सफेद कमीज में मेरे पास क्यों लाये। रंगीन फिल्म

में सफेद रंग नहीं आएगा। इस सफेद कमीज वाले को दफा करो यहां से। जल्दी करो, हमारे पास वक्त नहीं है।

[सफेद कमीज वाला व्यक्ति हड़बड़ाहट में चलने लगता है एनाउंसर उसे गले से पकड़कर रोकता है और वापस लाता है]

एनाउंसर : इसे हम दफा नहीं कर सकते। यही तो हमसे बातचीत करेगा।

प्रोड्यूसर : क्या ? दूसरा आदमी गूंगा-बहरा तो नहीं, या है ?

एनाउंसर : नहीं—लेकिन हमने इसके साथ रिहर्सल किया है। कौन जाने यह दूसरा आदमी क्या कर डाले ? यह जुबान से तो पहले ही गूंगा है।

प्रोड्यूसर : लेकिन अब बिलकुल वक्त नहीं है। ब्राडकास्ट शुरू होने वाला है ! चलो, इसको एक जैकेट दे दो।

[जैकेट की तलाश शोरोगुल और धूमधाम से शुरू। यह पता लगता है कि सभी सफेद कमीज पहने हैं। इसी समय दरवाजा खुलता है और एन्तोनोव भ्रमण से थका-मांदा अपने कमरे में दाखिल होता है। उसके हाथ में एक सूटकेस है और एक बैग है जिसमें चप्पलें बाहर लटकती हुई दिख-लाई दे रही हैं। वह नीली कमीज पहने है। ईवान एन्तोनोव स्तब्ध विमूढ़-सा दरवाजे पर रुक जाता है जैसे कि किसी ने उसे वहीं कीलों से गाड़ दिया हो। जो कुछ भी वह

देख रहा है उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा है।]

प्रोड्यसर : ब्राडकास्ट शुरू होने वाला हैं ! (**परेशान-सा इधर-उधर देखता है और ईवान एन्तोनोव दिखलाई देता है**) इसकी कमीज ले लो, यह रंगीन है। जल्दी करो। (**ईवान एन्तोनोव की ओर इशारा करता है**)

[कई व्यक्ति स्तब्ध से खड़े एन्तोनोव पर झपटते हैं, उसकी कमीज घसीट लेते हैं और कारीगर के ऊपर फेंकते हैं। ईवान घुटनों तक नंगा खड़ा रह जाता है]

प्रोड्यूसर : सुनिये – हम तैयार हैं। शुरू···

[कैमरे की लाल बत्तियां जल उठती हैं, उनका मुंह रोमन बाथ की ओर कर दिया जाता है। वहां पर दो कारीगर हैं, एक व्यक्ति है जो खुदाई के कपड़े पहने हैं और एक एनाऊंसर है। ये चारों कुर्सियों पर बैठे हैं]

एनाउंसर : अपने शिल्पकारों की शानदार खोज के बारे में बताने वालों में पहला होने की मुझे खुशी है। पम्पीलियंस के जमाने से बचाकर रक्खा गया यह रोमन बाथ इस बात का सबूत है कि हमारे देश में भौतिक और सांस्कृतिक सभ्यता उस जमाने में कितनी उन्नति कर चुकी थी और वही रोमन बाथ आज खोज निकाला गया है। हम उन खोज करने वालों से, जो इस समय हमारे बीच में इस रोमन बाथ में

मौजूदहैं , यह पूछने जा रहे हैं कि वो हमें इस अद्‌भुत खोज के महत्व के बारे में बताएं और यह भी बताएं कि इसकी जानकारी इन्हें कैसे मिली । हां, तो बताइए (**ईवान एन्तोनोव की कमीज पहने हुए व्यक्ति से पूछता है**) ।

[कारीगर उसकी तरफ देखता है, अटपटा-सा महसूस करता है और एक शब्द भी नहीं बोलता। एनाउन्सर उसकी तरफ मुस्कराता है और माइक और नजदीक करता है]

कारीगर : त्रायचोव ज्योर्जीव द्युलजरोव, पता : 73 सार बोरिस स्त्रीत (**रुक जाता है**)

एनाउंसर : हां-हां ?

कारीगर : मेरे दो बच्चे हैं—लड़कियां·····

एनाउन्सर : हमें आप रोमन बाथ के बारे में बताइये ! नहीं बतायेंगे ?

कारीगर : (**अपने साथी की ओर प्रोत्साहन की आशा से देखता है और फिर शुरू करता है**) हां—देखिए ना—हमें इस आदमी का फर्श ठीक करना था । हमें क्या पता था कि हम इतना बेड़ा गर्क कर देंगे ? बेचारा—छुट्टियां बिताने सैर के लिए गया था, समुद्र के किनारे, और चाबी हमें, दे गया···

एनाउंसर : मेहरबानी करके हमें रोमन बाथ के बारे में बताइये ।

कारीगर : जी—हां—बाथ। हमने पुराने तख्ते उखाड़े क्योंकि वह सड़ चुके थे, आप समझ रहे हैं

ना—और—थोड़ा और खोदा ताकि नींव मजबूत कर सकें। ताकि तख्ते दुबारा न सड़ जायें और···

एनाउंसर : हां-हां—और···

कारीगर : और एक तरह की नक्काशी दिखाई दी, हल्के गुलाबी रंग की। तब कीरो (**दूसरे कारीगर की ओर इशारा करता है जो सहमति में झुकता है**)ने कहा,"यहां—यहां और खोदो··· शायद यहां एक या दो सोने के सिक्के मिल जायें, क्या पता···और···"

एनाउंसर : और ?

कारीगर : इसलिए हमने और खोदा। लेकिन हमें कोई सिक्का नहीं मिला, लेकिन···तब इसके,कीरो के दामाद (**एम. ए. की तरफ इशारा करता है**)···जनाब यह इसके दामाद अभी बने नहीं हैं, लेकिन बनने वाले हैं,···ने ढूंढ निकाला··· तो जनाब जब हम खोद रहे थे···कीरो ने अपनी लड़की के सामने सारा भंडा फोड़ दिया, और···

एनाउंसर : और ?

कारीगर : और पेश्तर इसके कि हम इसे दुबारा ढांकते, उन्होंने ढूंढ़ निकाला।

एनाउंसर : धन्यवाद। हां तो कामरेड एनानीव, इसके बारे में आपके अपने क्या विचार हैं ? मेरा मतलब है एक विशेषज्ञ या माहिर होने के नाते आप कुछ बतायेंगे ?

एनानीव एम०ए० : सबसे पहले मैं अपने दर्शकों से जरा जल्दी भावुक हो जाने के लिए माफी चाहूंगा। इस खोज को समझना बड़ा आसान है लेकिन इतने बड़े पैमाने की यह मेरी पहली खोज है। और इसीलिए इसके बारे में बताते समय मैं भावुक हुए बिना नहीं रहता। मैं इसे एक अद्भुत खोज ही कहूंगा चाहे यह आपको कितना ही भद्दा क्यों न लगे। और यह अद्-भुत है इसमें शक की कोई गुंजाइश नहीं क्योंकि पौम्पीलियन्स और लूशियस के जमाने से संभाल कर रक्खा हुआ यह हमाम एक अद्भुत चीज है जो कि दुनिया में बेमिसाल है। चार मीटर लम्बे और तीन मीटर चौड़े इस रोमन बाथ में बनी नक्काशी और सुन्दर अप्सराएं--और पोम्पीलियंस के वह शब्द "हमेशा और अन्त तक" जगह-जगह खुदे दिखाई देते हैं। यह बहुत ही चतुराई से बनाया गया है। एक अंजान नक्काशकार की नक्काशी की झलक इसमें साफ दिखाई देती है। वह नक्काशकार जरूर ही मार्कस एन्टो-नियस ओक्टेवियन के स्कूल में पढ़ा होगा— एक ऐसा स्कूल जिसने ऐसी ही कई अद्भुत चीजें पैदा कीं। यह अद्भुत चीज अगर कजान-चुक टोम से बेहतरीन नहीं तो उसके बराबर जरूर है। इस विषय में कई विद्वानों का मत है कि इस समय के हमाम कई जालिमों ने नष्ट-भ्रष्ट कर दिये जो कि मनुष्य जाति के लिए

हमेशा के लिए नष्ट हो गए। इस तरह के हमामों के इक्के-दुक्के टुकड़े और नक्काशी के कुछ नमूने जो इसी जमाने के माने जाते हैं आज भी रोम में, केलिफोर्निया में और ब्रिटेन के म्यूजियम में पाये जाते हैं, हालांकि आज दिन तक इसका हमारे पास कोई ठोस प्रमाण नहीं है। लेकिन फिर भी हमारे सामने,सालिम और खूबसूरत हालत में यह रोमन बाथ है—बस सिर्फ पानी भरने की देर है कि यह रोमन बाथ नहाने के लिए तैयार। मुझे पूरा यकीन है कि रसोई और शायद टट्टी में की जाने वाली खुदाइयां अवश्य ही नये आश्चर्य और नई आशाओं को जन्म देंगी और हम···

[रसोई और टट्टी में खुदाई का नाम सुन-कर ईवान एन्तोनोव अपने आप पर नियंत्रण नहीं रख पाता है और कमर तक नंगे बदन ही ताल में कूद पड़ता है—एना-नीव एम० ए के ऊपर]

ईवान एन्तोनोव : नहीं ! रसोई मत छूना ! कम से कम रसोई तो मेरे लिए छोड़ दो।

[हाथापाई शुरू होती है। हमाम में से डंडे निकाल लिए जाते हैं, लोग ईवान एन्तोनोव को घसीट कर अलग करते हैं और एन्तो-नोव सबसे मुकाबला करता है]

प्रोड्यूसर : स्टूडियो ! स्टूडियो ! कुछ धुन चलाइए कुछ धुन चलाई—म्यूजिक—म्यूजिक प्लीज।

(परदा गिरता है)

दृश्य तीन

[ईवान एन्तोनोव अस्त-व्यस्त, खुदे-खुदाये कमरे में खड़ा, दोनों हाथों से अपना माथा खुजलाता हुआ, सोच रहा है। हल्के गुलाबी रंग का ताल उसके सामने है। यह कुल काला पड़ने लगा है। ईवान अकेला है, बाकी सब जा चुके हैं]

ईवान एन्तोनोव : (**अस्त-व्यस्त कमरे में घूम रहा है, बार-बार चीजों को उठाता है और फिर फेंक देता हैं**) वाह री किस्मत। इन्हें ऐसी चीज दुनिया में कहीं नहीं मिली जो मेरे ही रहने के कमरे में घुसकर ढूंढ़ निकालनी पड़ी। अब मैं रोमन बादशाह की तरह रहूंगा। (**दीवान घसीटता है, छोड़ देता है और ताल की तरफ घूरता है**) ये परियां कोई खास बुरी नहीं हैं···जाहिर है पौम्पीलियन्स कोई ऐसा-वैसा मामूली आदमी थोड़े ही था। (**चहलकदमी करता हुआ**) मैं बेकार में इतने सालों से मामूली हमामों में जाता रहा जबकि ठीक मेरी नाक के नीचे···

[अचानक बिज़ली जलती है, और धुंधला अंधकार दूर हो जाता है। एम० ए० कमरे में आ चुकता है]

एम० ए० : (**दृढ़ता से**) कौन हो तुम ? और यहां क्या कर रहे हो ?

ईवान एन्तोनोव : मैं यहां रहता हूं। ये मेरा अपना घर है। लेकिन तुम यहां क्या कर रहे हो ?

एम० ए० : (**नाराज़ होकर, कुरमुराता हुआ**) अरे, हां, मैं तो बिलकुल ही भूल गया था। तुम ईवान एन्तोनोव हो, हो ना ?

ईवान एन्तोनोव : हां—मैं हूं। तुम ये तो नहीं कहना चाहते कि तुम ईवान एन्तोनोव हो—क्यों ?

एम० ए० : मेरा नाम एनानीव है—एनानीव एम० ए०।

ईवान एन्तोनोव : ये एम० ए० क्या तुम्हारी जात है ?

एम० ए० : नहीं—यह मेरी डिग्री है।

ईवान एन्तोनोव : मेरा एक दोस्त अपने कुत्ते को एम० ए० कह-कर पुकारा करता था। वह शायद किसी एम० ए० से बदला निकालना चाहता था या उस दोस्त से बदला लेना चाहता था जो हर साल किसी तकनीकी परीक्षा में बैठा करता था। बहुत होशियार था।

एम० ए० : (**साधारण भाव से**) कौन, एम० ए० ?

ईवान एन्तोनोव : नहीं—वो कुत्ता। आखिरकार मेरे दोस्त ने उससे बदला नहीं लिया। बजाय इसके कि वह एम० ए० की बेइज्जती करे, वह कुत्ते की बेइज्जती किया करता था।

एम० ए० : तुम्हारे दोस्त की बजाय उस कुत्ते को इम्तहान में बैठना चाहिए था। वो इम्तहान देता और मामला तय हो जाता। क्या तुम्हारे पास कुत्ता नहीं है ?

ईवान एन्तोनोव : क्या तुम्हें किसी इम्तहान में बैठना है ? मैं एक कुत्ता तुम्हारे लिए तलाश कर दूंगा। चलो, कुत्ते की बात बाद में करेंगे। इस हमाम के बारे में बताओ। तुम इसे यहां से कब हटा रहे हो ? कल ?

एम० ए० : (नासमझी से) कैसा हमाम ?

ईवान एन्तोनोव : ये जो यहां है। रोमन बाथ ! ये अनोखी चीज़ !

एम० ए० : इसे मैं कहां ले लाऊंगा ?

ईवान एन्तोनोव : क्या मतलब है तुम्हारा ? कहां ले जाऊंगा ! म्यूज़ियम में, या कहीं सड़क पर। जहां हर आदमी देख सके। कहीं तुम्हारा इरादा मेरे घर को आम रास्ता बनाने का तो नहीं है ?

एम० ए० : देखो—ऐसी अनोखी चीजों को उठा कर ले जाना जरा मुश्किल काम है। और इससे भी ज्यादा अहम बात यह है कि यह एक जोखिम भरा काम है। बात ये है साफ और कायदे की। और खोज की शुरुआत में, खासतौर से इस मामले में, तो इसका सवाल ही नहीं उठता। हम ऐसा जोखिम नहीं उठा सकते।

ईवान एन्तोनोव : तुम कौन सा जोखिम नहीं उठा सकते ?

एम० ए० : इस हमाम को हटाने का। ना तो हमने अभी इसकी बनावट के बारे में, ना इसमें ढाले गए सामान की अच्छाइयों के बारे में, ना इसकी नक्काशी के बारे में, ना इसमें इस्तेमाल किये गए संगमरमर के गुणों के बारे में कुछ पढ़ पाये हैं और ना ही अभी यह समझ पाये हैं कि

बदलते हुए मौसम का इस पर क्या असर होगा। इसके अलावा ना हम···

ईवान एन्तोनोव : तो अभी तक तुम्हें मालूम ही नहीं।

एम० ए० : नहीं, हमें नहीं मालूम। अभी हमने तुम्हारे कमरे के मौसम और तापमान के बारे में भी नहीं पढ़ा है। शायद हवा में कुछ ऐसे भुनगे हैं जिनकी वजह से कुछ घुटन सी रहती है। आप समझ रहे हैं ना ?

ईवान एन्तोनोव : हां-हां, और फिर ?

एम० ए० : शायद, जब हम इसे निकालेंगे तो यह टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा और मिट्टी बन जायेगा। यह सदियों पुराना···

ईवान एन्तोनोव : तुम इसे अपने कमरे में क्यों नहीं ले जाते ? शायद वहां पर भी भुनगे हैं ?

एम० ए० : (**बनावटी मुस्कराहट के साथ**) माफ करना। यह अहम प्रश्न नहीं है—बहरहाल यह साइन्स की बातें हैं···

[ईवान एन्तोनोव अपने खुदे हुए कमरे में विचारमग्न होकर घूमने लगता है]

ईवान एन्तोनोव : तो तुम इसे जल्दी नहीं हटाओगे ?

एम० ए० : शायद हम इसे कभी ना हटायें।

ईवान एन्तोनोव : क्या मैं इसे पानी से भर सकता हूं।

एम० ए० : (**घबराकर**) पानी से ? किसलिए ?

ईवान एन्तोनोव : इसमें नहाने के लिए। क्योंकि मेरे रहने के कमरे के बीच में एक ताल है, उसका मैं और क्या इस्तेमाल कर सकता हूं ?

एम० ए० : यह एक जुल्म है। हमें अभी तक नहीं पता···

ईवान एन्तोनोव : ठीक है। इसमें नहाना भी मेरे लिए जुल्म है। क्या मैं इसमें एक पलंग बिछा सकता हूं ?

एम० ए० : कैसा पलंग ?

ईवान एन्तोनोव : चौड़ा, एक पलंग।

एम० ए० : उसका तो सवाल ही पैदा नहीं होता।

ईवान एन्तोनोव : क्यों ? तुम समझते हो कि वह अन्दर नहीं जायेगा ?

एम० ए० : तुम्हें इस हमाम की अहमियत का जरा-सा भी अन्दाज़ नहीं है।

ईवान एन्तोनोव : (टहलते हुए) क्या इसमें मेज़ जाएगी ?

एम० ए० : एक इलैक्ट्रिक कुकर क्यों नहीं ? उसमें तुम पकौड़े तलोगे, हेमबरगर बनाओगे···एक इन्सान को इससे ज्यादा और क्या चाहिए।

ईवान एन्तोनोव : अच्छा। मैं सब मानता हूं। पर मैं रहूंगा कहां ?

एम० ए० : क्या मतलब है तुम्हारा तुम कहां रहोगे ? मुझे नहीं मालूम।

ईवान एन्तोनोव : मैं कहां सोऊंगा ? मैं कहां काम करूंगा ? मैं कहां चाय पिऊंगा। मैं कहां गिरा···माफ करना मेरा गिटार कहां है ?

एम० ए० : बुक-केस के पीछे।

[ईवान एन्तोनोव उसे घूरकर देखता है और बुक-केस के पास जाता है। उसके पीछे से गिटार का सिर्फ हाथ में पकड़ने वाला भाग ही उसे मिलता है जो बाहर घसीटता है]

मेरा इससे कोई ताल्लुक नहीं।

ईवान एन्तोनोव : तुम्हारा इससे कोई ताल्लुक नहीं···और मेरे बच्चे कहां पैदा होंगे ?

एम० ए० : उधर जाओ—अब बच्चों पर आ गए। मुझे उनके बारे में नहीं मालूम। सब अपने बच्चों का ख्याल खुद रखते हैं। तुम खुद उनका ख्याल रखोगे और मैं तुम्हें बता दूं—तुम्हारे बच्चे ही नहीं होंगे—सोचने से बच्चे नहीं होते, उसके लिए कुछ करना पड़ता है। एन्तोनोव, साइन्स कुर्बानी चाहती है बिना कुर्बानी के तरक्की नहीं हो सकती।

ईवान एन्तोनोव : माना तुम कुर्बानी करते हो, करो—खोज तुम कर रहे हो; मैं क्या करूं ? मुझे साइन्स से कोई वास्ता नहीं। उसकी अहमियत तुम्हारे लिए है। दूसरों से कुर्बानी करने को क्यों कहा जाता है ?

(एम०ए० चुप है—बनावटी हंसी हंसता है)

और ऊपर से तुर्रा ये कि तुम मेरी रसोई और टट्टी भी खोदने जा रहे हो। तुम मुझसे क्या उम्मीद रखते हो ?

एम० ए० : एन्तोनोव, तुम अपनी जाती खुशी आप लोगों की खुशियों से ऊपर रख रहे हो ! तुम स्वार्थी हो। अगर हम इस हमाम को यहां से उठायेंगे तो आम लोगों को तुमसे ज्यादा नुकसान होगा। तुम्हें तो दूसरी जगह मिल जायेगी—न जाने कितने मकान बन रहे हैं। हमारे देश में हर जगह मकान बन रहे हैं। साइन्स इस

अद्भुत खोज को हटाने का जोखिम नहीं ले सकती।

ईवान एन्तोनोव : जोखिम नहीं लिया जा सकता ?

एम० ए० : नहीं।

ईवान एन्तोनोव : तो मैं लूंगा।

एम० ए० : तुम ? कैसे ?

ईवान एन्तोनोव : मैं इसे गली में फेंक दूंगा, ऐसे। (**बावड़ी में कूदता है**) एक कुल्हाड़े से, हथौड़े से, फावड़े से और इस बरमे से। ऐसे। बल्गारिया में यह पहला केस होगा, कि नहीं होगा ?

एम० ए० : तुम ज़ालिम हो।

ईवान एन्तोनोव : ठीक है—मैं ज़ालिम हूं, और वह भी अपने ही घर में। और मुझे यह पसन्द नहीं कि कोई अनजान आदमी मेरे घर में ज्यादा देर तक रुके। मुझे जल्दी सोने की आदत है—चिड़ियों के चहचहाते ही। दरवाजा तुम्हारे बाईं तरफ है।

[ईवान रसोई में जाता है। एम० ए० झुंझलाहट को दबाते हुए सिगरेट सुलगाता है। ईवान वापस आता है।]

तुम अभी यहीं हो ?

एम० ए० : अगर मैं तुम्हें सही समझ रहा हूं, तो यह मेरे लिए इशारा है।

ईवान एन्तोनोव : जनाब ! मैं आपको इशारा कर रहा हूं। और मैं यह इशारा कर रहा हूं कि तुम मेरे घर से बाहर निकल जाओ। बहुत हो चुका। बिना किसी अधिकार के तुम घर में घुसे, तुमने इसे

खोद डाला, तुमने फर्नीचर तोड़ा, तुमने सारी चीजें उलट-पुलट कर दीं। और इन सबके बावजूद तुम्हारी इतनी जुर्रत कि तुम मुझे जालिम कहो। निकल जाओ।

एम० ए० : लेकिन अब यह सिर्फ तुम्हारा ही घर नहीं है।

ईवान एन्तोनोव : तो और किसका है ? शायद तुम्हारा ?

एम० ए० : यह आम लोगों का है। इस तरह के सैकड़ों-हज़ारों मकान हैं—लेकिन पोम्पीलियंस के जमाने का हमाम सिर्फ यहीं पर है।

ईवान एन्तानोव : निकल जाओ और अपना हमाम भी साथ ले जाओ !

एम० ए० : निकल जाऊं ताकि रोमन बाथ को तुम इसी रात बरबाद कर दो और हमें हमारे मुकद्दर पर छोड़ दो। नहीं ऐसा नहीं होगा !

ईवान एन्तोनोव : रात की क्या जरूरत है। मैं अभी थोड़ी देर में शुरू कर दूंगा और आधे घंटे में खोद डालूंगा। इसके बाद मैं इसे तुम्हें डाक से भेजूंगा—एक टुकड़ा हर रोज़ ! तुम्हें किस नाप के टुकड़े चाहिए। छोटे या बड़े ? भई, नाप गाहक की पसन्द का !

एम० ए० : उसके बाद मैं तुम्हें सिगरेट भेजूंगा।

ईवान एन्तोनोव : कहां ?

एम० ए० : जेल में। सिगरेट गाहक के पसन्द की होंगी। अगर पोम्पीलियंस के जमाने का यह आखिरी हमाम बर्बाद हो गया तो यह दुनिया मुझे कभी माफ नहीं करेगी। सोचो, एन्तोनोव, यह हमाम सारी मनुष्य जाति के लिए नष्ट

हो जायेगा। इस नस्ले इन्सानी के बारे में सोचो···

ईवान एन्तोनोव : तो तुम नस्ले इन्सानी के बारे में सोच रहे हो ? क्यों ? और इन्सान के बारे में कौन सोचता है ? वो इन्सान, जिससे यह नस्ले इन्सानी का जन्म हुआ है। मैं नस्ले इन्सानी के बारे में सोच-सोचकर थक जाऊं और इन्सान के बारे में कोई सोचे तक नहीं। कितना आसान है— है ना। नस्ले इन्सानी एक खोखला ख्याल है। इन्सान नस्ले इन्सानी से पहले है और उसे कुछ चाहिए। मैं क्या हूं ? मैं कहां हूं ? सारी नस्ले इन्सानी एक तरफ और ईवान एन्तोनोव दूसरी तरफ। वह नस्ले इन्सानी में नहीं गिना जाता क्योंकि उसके कमरे में रोमन बाथ जो निकल आया है।

एम० ए० : यह बेकार की दलीलें हैं।

ईवान एन्तोनोव : और वो दरवाजा है। वो दरवाजा जिससे तुम बाहर चले जाओ (**दरवाजे की ओर इशारा करता है।**)

[इसी समय दरवाजा खुलता है और मार्था, जो एम० ए० की प्रियसी है, अन्दर दाखिल होती है]

मार्था : गुड ईवनिंग।

ईवान एन्तोनोव : गुड ईवनिंग ! गुड ईवनिंग !

मार्था : (**एम० ए० से**) तुमने तो कहा था हम अकेले होंगे।

ईवान एन्तोनोव : ओ···ओ···ओह।

मार्था : वो आदमी यहां क्या कर रहा है ? तुम्हारा दोस्त है ?

ईवान एन्तोनोव : बचपन का दोस्त। शूरू से। बचपन का। सबसे अच्छा दोस्त। मेरा नाम ईवान एन्तोनोव है।

एम० ए० : इसका नाम वाक़ई ईवान एन्तोनोव है, लेकिन यह मेरा दोस्त नहीं है।

मार्था : तब दिन के इस व़क्त यह यहां क्या कर रहा है ? क्या ये यहां किसी काम से आया है ?

ईवान एन्तोनोव : सोचिये तो जरा ! मैं यहां रहता हूं।

मार्था : यहां रहने से तुम्हारा क्या मतलब ?

ईवान एन्तोनोव : बड़ा सीधा-साधा मतलब ! मैं यहां सोता हूं, मच्छर भुनगे खाता हूं मैं काम करता हूं, कभी किनारे लगे हुए तख्तों पर चढ़ता हूं और वहां से अपने पलंग पर कूदता हूं। लेकिन इन तख्तों में स्प्रिग लगे होने की वजह से मैं अक्सर ऐसा नहीं करता, इससे उन्हें नुकसान पहुंचता है।

मार्था : मैंने सोचा था कि मकान की बेदखली हो चुकी है। ऐसा तुमने मुझसे कहा था···

एम० ए० : (**खीजकर**) हां-हां मैंने सब कदम उठा लिये हैं, लेकिन···वो बहुत ढीले हैं, सब तरफ नौकर-शाही हैं···

मार्था : और जो आदमी यहां रहता है उसे मिल चुका।

ईवान एन्तोनोव : क्या मिल चुका है उसे ?

एम० ए० : मार्था, यह वक्त ऐसी बातों का नहीं है, मैं तुम्हें बाद में सब कुछ समझा दूंगा।

ईवान एन्तोनोव : नही-नहीं-नहीं, क्या मिल चुका है उसे ? क्या बेहूदगी है यहां ? एक आदमी छुट्टियां बिताने समुद्र के किनारे तीन हफ्ते के लिए जाता है और···(**कंधे उचकाता है**) तुम लोग किस बेदखली की बात कर रहे हो ? इसके बारे में उन्हें मुझसे बात करनी चाहिए, या नहीं ?

मार्था : यह रोमन बाथ सिर दर्द बनने लगा है। जब से तुमने इसे ढूंढ़ निकाला है सब कुछ उलट पलट···

ईवान एन्तोनोव : (**अचानक बीच में और अपने हाथ से अस्त-व्यस्त चीजों को दिखाते हुए**) हां-हां बिलकुल उलट-पलट···

मार्था : तुम हफ्तों बाहर रहते हो, रात यहां बिताते हो, इस ताल में; तुम बदल गए हो, बिलकुल बदल गए हो कभी-कभी तुम्हें समझना भी मुश्किल हो जाता है। ये अप्सराएं तुम्हारे लिए मुझसे ज्यादा कीमती हैं।

एम० ए० : मार्था !

ईवान एन्तोनोव : (**व्यंग से**) क्या मैं दाल-भात में मूसरचन्द तो नहीं ?

मार्था : तुम सब पर शक करते हो, तुम सबसे डरते हो, तुम्हारे ख्यालात गन्दे हैं।

एम० ए० : मार्था, न तो यह मेरे ख्यालात के इज़हार की जगह है और न ही वक्त।

ईवान एन्तोनोव : हां—वक्त ! वक्त बहुत ही तेज़ी से आगे बढ़ रहा है; और जैसा कि मैं आपको पहले ही बता चुका हूं···मुझे ठीक से नहीं मालूम कि

इनका आपसे क्या रिश्ता है, मैं जरा जल्दी सोया करता हूं, चिड़ियों के चहचहाते ही। यह मेरी पुरानी आदत है। और मैं अकेले सोना पसन्द करता हूं। बड़ी अजीब बात है ना ? अजनबियों के सामने कपड़े उतारते मुझे बड़ा अटपटा लगता है।

एम० ए० : बकवास बन्द करो ! तुम्हें मालूम है तुम कहां हो ?

ईवान एन्तोनोव : (**स्तब्ध सा**) मुझे मालूम है मैं कहां हूं ?···

एम० ए० : तुम घूमने जा सकते हो, बड़ी हसीन शाम है।

ईवान एन्तोनोव : मैं घूमने नहीं जाना चाहता। मैं सोना चाहता हूं। तुम घूमने चले जाओ।

एम० ए० : तुम रसोई में सो सकते हो ?

ईवान एन्तोनोव : चूल्हे पर ?

एम० ए० : एक आराम कुर्सी डाल सकते हो।

ईवान एन्तोनोव : मैं रसोई में आराम कुर्सी पर क्यों सोऊं, जब कि इस काम के लिए खास तौर से मेरे पास एक कमरा है ?

मार्था : (**नाराज होकर**) तुमने वायदा किया था कि हम अकेले होंगे। कितने दिनों से हम अकेले नहीं मिले। तुमने कहा था आज शाम को हम अकेले मिलेंगे। कुछ करो ना।

एम० ए० : कामरेड एन्तोनोव, तुम घूमने क्यों नहीं चले जाते ? कितनी सुहानी शाम है, ताज़ा और ठंडी···

मार्था : (**नाजुक स्थिति को समझते हुए**) चलो, हम कहीं और चलते हैं।

एम० ए० : अगर मैं यह जगह छोड़कर जाऊंगा तो ये इस हमाम को तहस-नहस कर देगा !

ईवान एन्तोनोव : जरूर कर दूंगा।

मार्था : तुम ऐसा कैसे कर सकते हो ? यह एक अद्-भुत (**नायाब**) इमारत है।

ईवान एन्तोनोव : तुमने मेरे कमरे को क्यों तहस-नहस किया ? वह भी तो अद्भुत (**नायाब**) था। एक ही कमरा मेरे पास था।

मार्था : लेकिन रोमन बाथ···

ईवान एन्तोनोव : मैं रोमन बाथ के खिलाफ नहीं हूं, मुझे खुशी है कि यह मेरे कमरे में पाया गया और किसी जगह नहीं। मुझे इस बात पर फक्र है कि इस तरह का हमाम हमारे शहर में मौजूद हैं और कहीं नहीं। लेकिन तुम इसे यहां से ले जाओ। चाहो तो म्यूजियम में रक्खो या अपने घर ले जाओ। मेरे पास रहने के लिए कोई जगह नहीं है। मुझे दूसरा घर दे दो, हालांकि यह मेरा पुश्तैनी मकान है जो कि शानदार और एशो-इशरत से भरा, शान्त। मैं साइन्स के नाम पर इसे कुर्बान कर दूंगा। लेकिन मेरा अपना घर होते हुए मैं बाहर घूमने चला जाऊँ, ऐसा नहीं हो सकता, चाहे भले ही वह टूट-फूट गया हो। और अब मैं जा रहा हूं— सिर्फ टट्टी तक। इसलिए ज्यादा खुश मत हो बैठना। (**जाता है**)

मार्था : वह ठीक कहता है। तुम उसे दूसरा मकान क्यों नहीं दे देते ?

एम० ए० : कौन देगा उसे मकान ?

मार्था : क्या तुम्हारी इंस्टीट्यूट नहीं दे सकती।

एम० ए० : हमारी इंस्टीट्यूट एक हजार साल पुरानी चीजों से वास्ता रखती है। वह मकान नहीं बांटती।

मार्था : लेकिन तुम यह और जगह क्यों नही ले जाते अपनी इंस्टीट्यूट में या किसी म्यूज़ियम में।

एम० ए० : तुम जानती हो तुम क्या कह रही हो? बस यही तो बाकी रह गया है जिससे लोग शेरों की तरफ उस पर टूट पड़े और मेरे लिए कुछ न बचे। एक प्रोफेसर इस पर भाषण दे, दूसरा साइन्स के पहलू पर बोले, तीसरा रोम में इस पर होने वाले सम्मेलनों में हिस्सा लेने जाये···नहीं नहीं, अगर मैंने इसे यहां से हटाया तो यह खोज मेरी न रहकर किसी और की हो जायेगी। हर आदमी इससे फायदा उठाना चाहेगा। नहीं, चाहे कुछ भी हो, ऐसा नहीं होगा।

मार्था : मगर वो आदमी सड़क पर तो नहीं रह सकता।

एम० ए० : तुम जानती हो उस हमाम की मेरे लिए क्या अहमियत है। ऐसा मौका जिन्दगी में सिर्फ एक बार ही हाथ आता हैं ! अगर इसको हाथ से जाने दिया तो सब खत्म।

मार्था : मत भूलो कि यह हमाम···

एम० ए० : यह हमाम एक भाषण है, एक डिग्री है, एक वैज्ञानिक खोज है, सम्मेलन—रोम, जेनेवा,

लन्दन, मैड्रिड, तीन-तीन अकादमियों की सदस्यता, इज्जत, नाम, पैसा···मैं इस हमाम की आखिरी बूंद तक अपने हक में ऐसा निचोड़ूंगा कि···मुझे काम करना चाहिए, फौरन काम करना चाहिए, बिना किसी देरी के। यह ईवान एन्तोनोव मेरे रास्ते में आ रहा है। यह पिशाच कहां से टपक पड़ा ?

मार्था : मुझे लगता है कि तुम कुछ ज्यादा ही बहक रहे हो। आखिर मकान तो उसी का है। वह नहीं बल्कि हम टपक पड़े।

एम० ए० : (**बिना ध्यान दिए**) बिना देरी किए, जल्द से जल्द, जिससे कोई मुझसे आगे न निकल जाय···

[इसी समय मार्था धीरे से अपना हाथ उसके मुंह पर रख देती है फिर अपना हाथ उसके कंधे पर रखती है। वो उसकी आंखों की तरफ देखती है]

मार्था : (**चुपचाप, दोस्ताना अन्दाज में**) अरे तुम्हें क्या हो गया ? लगता है तुम अन्धे हो गए हो। क्या तुम मुझे देख सकते हो ? सिवाय हमाम के क्या तुम कुछ नहीं देख सकते ?

एम० ए० : (**कुछ और सोचते हुए, बिना समझे**) मैं तुम्हें देख सकता हूं, मैं तुम्हें देख सकता हूं।

मार्था : (**नजदीक से**) इस तरफ देखो। मेरी तरफ देखो, मुझे देख सकते हो ?

एम० ए० : (**विषय की गहराई तक पहुंचे बिना**) मैं तुमसे कह चुका हूं—मैं तुम्हें देख सकता हूं। मेरी

मेरी आंखें बिलकुल ठीक हैं।

[मार्था अपने हाथ उसके कन्धे से हटा लेती है और उससे कुछ दूरी पर खिसक जाती है। धीरे-धीरे वह गम्भीर हो जाती है]

मार्था : और अब ?

एम० ए० : (**खीजकर**) मार्था !

मार्था : (**हमाम में कूद जाती है**) और अब ?

एम० ए० : मैं तुम्हें अच्छी तरह देख सकता हूं। मेरी रोशनी बहुत तेज है (**उसके लहजे से साफ जाहिर है कि वह समय की महत्ता को नहीं पकड़ पाता है और यकीनन वह कुछ नहीं देख पाता**)

मार्था : (**जैसे कि स्वयं से कह रही हो**) यह कुछ नहीं देख सकता। (**उसके पास जाती है**) तुम कुछ नहीं देख सकते। क्यों ? कब से ?

एम० ए० : (**खीझकर**) ये अंधेपन की बातें बन्द करो। क्या यह मज़ाक है ?

मार्था : हां। मज़ाक है।

[इसी समय ईवान एन्तोनोव पाजामा पहने बाहर आता है और पलंग की तरफ जाता है]

ईवान एन्तोनोव : अच्छा, अब मैं सोने जा रहा हूं। गुडनाइट।

मार्था : लेकिन ये तो यहां सोने जा रहा है।

एम० ए० : (**खूब खीझकर**) तुम देखो क्या हालत है···

मार्था : (**तुनक कर**) हालत तो एक महीने से ऐसी ही है। तुम्हारे पास मेरे लिए कभी वक्त नहीं

होता, ना ही तुम मुझे फोन करते हो। जब से तुमने यह रोमन बाथ ढूंढ़ निकाला है, तुम मेरे बारे में सोचते ही नहीं—जैसे कि मैं हूं ही नहीं।

ईवान एन्तोनोव : माफ करना। तुम लोगों की बातें मुझे सोने नहीं दे रही हैं और यह लैम्प भी।

मार्था : हर कोई अपने बारे में सोचता है।

ईवान एन्तोनोव : यह मेरी अजीबोगरीब आदतों में से एक है—मैं बत्ती बुझाकर सोता हूं।

मार्था : तुम हमेशा हमाम के बारे में सोचते हो और सच पूछो तो, हमाम के बारे में नहीं बल्कि उससे पैदा होने वाले मौकों के बारे में।

एम० ए० : मार्था, लगता है तुम कुछ ज्यादा ही आगे बढ़ती जा रही हो। तुममें ज्यादा ही आग लग रही है।

ईवान एन्तोनोव : आग तो मुझमें ज्यादा लग रही है। लैम्प की रोशनी सीधी मेरी आंखों में पड़ रही है।

एम० ए० : चलो, इस फिलिस्तीनी लैम्प को बुझा दें। (**बुझाता है**) मार्था, आओ अब हम आराम से बात करें। हम अंधेरे में ज्यादा अच्छी तरह से बात कर सकते हैं।

मार्था : मैं बात नहीं करना चाहती। वह सब सुन सकता है।

ईवान एन्तोनोव : बिल्कुल ठीक।

मार्था : चलो, बाहर चलें, कहीं और चलें।

ईवान एन्तोनोव : मेरे कान बहुत तेज़ हैं बिल्कुल जानवरों जैसे—मैं आधे किलो मीटर दूर तक की बातें सुन

सकता हूं।

एम० ए० : मार्था, मुझे लगता है कि तुम इस वक्त की अहमियत को नहीं पहचानतीं।

मार्था : तुम अपने ही बारे में सोचते हो।

एम० ए० : मैं, अपने और तुम्हारे दोनों के बारे में सोचता हूं।

मार्था : सिर्फ अपने बारे में। कल तुम किसी मकबरे या मिट्टी के टूटे बर्तन के पीछे मुझे छोड़ दोगे।

ईवान एन्तोनोव : यह सौ फीसदी सही है।

एम० ए० : ऐ, "तुम्हें टांग अड़ाने की जरूरत नहीं है। तुमसे किसी ने सलाह नहीं मांगी।

ईवान एन्तोनोव : मुझसे कभी कोई सलाह नहीं लेता। जब मेरा कमरा खोदा गया था तब भी मुझसे नहीं पूछा था।

मार्था : नहीं, अब ऐसे नहीं चल सकता, हद् हो गई। यह पहली बार तो नहीं। तुम हमेशा जल्द-बाजी करते हो, कोई न कोई चीज़ हमेशा तुम्हारे लिए जरूरी बनी रहती है···मैं बूढ़ी नहीं हूं, मैं सिर्फ इन खण्डहरों में···

एम० ए० : मार्था, आजकल के आदमियों की तरह सोचो···

मार्था : मतलब तुम्हारी तरह—है ना ?

ईवान एन्तोनोव : सोचने की जरूरत ही क्या है—ख्यालातों से हरकतों का खून होता है।

मार्था : (**ईवान एन्तोनोव की तरफ देखती है**) चलो, हम चलें, कम से कम आज शाम। यह हमाम नहीं तोड़ेगा। नहीं तोड़ोगे ना।

ईवान एन्तोनोव : **(एम० ए० की ओर इशारा करके)** सुनो, यह क्या कहता है।

एम० ए० : ये तोड़ेगा।

मार्था : नहीं तोड़ेगा। यह हमें वायदा देगा कि यह ऐसा नहीं करेगा—दोगे ना ?

एम० ए० : पागल मत बनो—वायदों पर आजकल कौन यकीन करता है ?

मार्था : तो फिर तुम्हें रोमन बाथ या मुझे—दोनों में से एक को चुनना होगा।

एम० ए० : तुम्हें ऐसी शर्त रखने का कोई अधिकार नहीं है तुम जानती हो···

मार्था : जानती हूं। मैं जानती हूं कि रोमन बाथ से तुम्हारा क्या मकसद है। मैं तुमसे उसे बिल्कुल छोड़ देने के लिए तो नहीं कह रही। मैं सिर्फ यह चाहती हूं कि आज शाम तुम मेरे साथ चलो। आखिरकार मैं भी तो कुछ हूं—हूं ना ?

एम० ए० : आज शाम निकलना मेरे लिए बिलकुल नामुमकिन है।

मार्था : तो ठीक है—आल दी बैस्ट। **(जाती है)**

ईवान एन्तोनोव : एक खूबसूरत लड़की। मैं जाऊंगा इसके साथ जहन्नुम में जाय यह रोमन बाथ।

एम० ए० : बहुत बकवास कर ली जनाब ! **(सिगरेट सुलगाता हुं—गुस्से से भरपूर)**

ईवान एन्तोनोव : सम्भोग (सैक्सुअल लाइफ) हाजमे की नींव है।

एम० ए० : जुबान बन्द रक्खो !

ईवान एन्तोनोव : ये अखबारों में छपा था।

एम० ए० : बेवकूफ ! !!

ईवान एन्तोनोव : अभी हमें मालूम नहीं कि कौन बेवकूफ है। मैं तो उस लड़की के पीछे जाता हूं और उसे घर छोड़कर आऊंगा।

(स्तब्ध एम० ए० के कुछ कहने से पहले ही ईवान एन्तोनोव निकल जाता है)

[एम० ए० बेचैनी से सिगरेट पी रहा है। रोमनबाथ में रक्खे अपने टूटे-फूटे पलंग पर बैठा है। घड़ी की टिक-टिक उसके चैतन्य मस्तिष्क में घुसकर तीखी और गहरी चोट कर रही थी। टिक-टिक करता समय निकल रहा है···एम० ए० बत्ती बुझाता है और अंधेरे में सिगरेट पी रहा है। ईवान एन्तोनोव अपने खुदे-खुदाये कमरे में खट-खट करता हुआ आता है और रसोई की तरफ जाता है]

एम० ए० : **(पलंग के किनारे लगे लैम्प को जलाता है जो कि रोमन बाथ में लगा है)** कहां चले ?

ईवान एन्तोनोव : ओह, तुम अभी तक यहीं हो—यहीं ? अपने हमाम में बैठे हो।

एम० ए० : **(शक से)** कहां जा रहे हो ?

ईवान एन्तोनोव : मुझे भूख लगी है। बस एक लुकमा खाऊंगा। इन कामों के बाद हमेशा भूख लगती है।

(फ्रिज खोलता है और सलामी का एक टुकड़ा निकालता है)

एम० ए० : किन कामों के बाद ?

ईवान एन्तोनोव : कैसे बच्चे हो—हमेशा सवाल पूछते रहते हो।

कुछ बातें स्कूल के बच्चों के लिए मना होती हैं।

एम० ए० : तुम्हें बताना पड़ेगा।

ईवान एन्तोनोव : क्यों बताना पड़ेगा ? तुम मेरे प्रोफेसर तो नहीं हो—या हो ? या तुम मेरे वार्डन हो ?

एम० ए० : वह तुम्हें मिली ही नहीं। (**आशा पूर्व ढंग से कहता है**)

ईवान एन्तोनोव : तुम्हें उससे क्या ? तुम्हें हमाम पसन्द था !

एम० ए० : मैं तुम्हारा मुंह कुचल दूंगा।

ईवान एन्तोनोव : मेरे रास्ते में मत आना !

एम० ए० : एन्तोनोव, जो भी मेरे रास्ते में आया है, **मैंने** उन सबको कुचल दिया है।

ईवान एन्तोनोव : शायद तुम एम० ए० नहीं हो—तुम्हारी जात है रोलर—रोलर एनानीव।

एम० ए० : मैं तुम्हें कुचल दूंगा, एन्तोनोव !!!

ईवान एन्तोनोव : तुम मुझे गुस्सा दिलाने की कोशिश कर रहे हो ? तुम रात में कुचलोगे ? वो इसलिए कि मैं सोने जा रहा हूं ? (**लेट जाता है, कम्बल ओढ़ लेता है**)

एम० ए० : तुमने मार्था के साथ क्या किया ?

ईवान एन्तोनोव : (**व्यंगपूर्वक**) हमने हर फन की बातें कीं।

एम० ए० : मुझे बताओ क्या·····

ईवान एन्तोनोव : (**बीच ही में**) कल सुबह मैं तुम्हें रंगीन चाक से नक्शे बनाकर समझा दूंगा। अब मैं सोने जा रहा हूं। और नादानी के सवाल पूछ कर मुझे परेशान मत करना। (**एम० ए० लाइट**

बुझाता है मंच पर अन्धकार)

[दूसरे दिन सुबह के चार बजे। धीरे-धीरे मंच पर प्रकाश फैलता है। ईवान एन्तोनोव का रहने का कमरा। उसी अवस्था में—खुदा हुआ, फर्नीचर फैला हुआ। ताल के बीच में पलंग डाले एम० ए० सो रहा है। सूराखों पर तख्ते ढंके हैं ताकि उसे पार किया जा सके। ईवान एन्तोनोव भी सो रहा है।

चुस्त कपड़े पहने, अधेड़ उम्र का एक व्यक्ति, सेकोव, दाखिल होता है। शकल ही से वह एक अनुभवी व्यापारी पुरुष लगता है जो कि जीवन में विभिन्न प्रकार के व्यापार कर चुका है। वह इधर-उधर देखता है, रोमन बाथ की तरफ गौर से देखता है, और फिर दोनों सोए हुए व्यक्तियों की ओर देखता है। और फिर कुछ हल्का-सा हिचकिचाता है।]

सेकोव : गुड मार्निग ! (**शान्ति—दोनों सो रहे हैं**) **जोर से**) गुड मार्निग !!

(**ईवान एन्तोनोव और एम० ए० सोये हुए हैं—दोनों नहीं सुनते**) (**चीखकर**) गुड मार्निग !!!

ईवान एन्तोनोव : (**जग जाता है—धीरे-से अपने बिस्तरे पर उठता है**) ऐं ! अब क्या है ?

सेकोव : (**मुस्करा कर**) मैंने कहा, "गुड मार्निग।"

ईवान एन्तोनोव : बस ! इसीलिए मुझे जगाया था ? गुड मार्निंग कहने के लिए—मुझे ?

सेकोव : नहीं।

ईवान एन्तोनोव : मैंने सोचा शायद कारीगरों को गुड मार्निंग करने के लिए ही तुम्हें भेजा जाता है और इसके लिए तुम्हें तनख्वाह दी जाती है। वैसे यह आदमी की देखभाल के लिए अच्छा ख्याल है !

सेकोव : **(गहराई से परखने वालों की तरह रोमन बाथ की जांच करते हुए)** माफ कीजिए—एक अनोखा रोमन बाथ—है ना ?

ईवान एन्तोनोव : हां, कहीं इत्तफाक से तुम एम० ए० तो नहीं हो—या हो ? क्योंकि यहां एक पहले ही सो रहा है।

सेकोव : बदकिस्मती से मैं पढ़ाई की उन बुलन्दियों तक नहीं पहुंच सका। मेरे पास सिर्फ स्कूल सर्टिफिकेट है।

ईवान एन्तोनोव : हूं, अब मेरा हौसला बढ़ा। क्या मैं यह पूछने की जुर्रत कर सकता हूं कि तुम यहां किस लिए आए हो ? अपने स्कूल सर्टिफिकेट के बूते पर तो यहां नहीं पहुंच सकते।

सेकोव : मैं ईवान एन्तोनोव से मिलने आया हूं, जो कि इस मकान के मालिक हैं। क्या मैं उनसे बात कर सकता हूं ?

ईवान एन्तोनोव : जहां तक ईवान एन्तोनोव से मिलने का सवाल है, वह मैं ही हूं। हालांकि जैसे कि हालात गुजर रहे हैं, मैं किसी भी वक्त मकान की

मल्कियत में तब्दीली की उम्मीद करता हूं। इसलिए मौके का पूरा फायदा उठा लो।

सेकोव : मुझे माफ कीजिए, क्योंकि आप दो जने हैं ···आप समझ रहे हैं ना, इसलिए···आप अपने ईवान एन्तोनोव होने का कोई सबूत दे सकते हैं ?

ईवान एन्तोनोव : क्या आपको मेरी जनम-पत्री चाहिए ?

सेकोव : ओह, जनाब आपका आइडैन्टिटी कार्ड ही काफी है। मैं आपको यकीन दिलाता हूं यह हमारे दोनों के हाथ में है।

ईवान एन्तोनोव : अजीब काम है आपका ! चूंकि आपके पास सिर्फ स्कूल सर्टिफिकेट है इसलिए मैं आपको दिखाता हूं···(**आइडैंटिन्टी कार्ड दिखाता है**)

सेकोव : आपका बहुत-बहुत शुक्रिया। (**अपना आई-डैन्टिटी कार्ड दिखाता है**) सेकोव—आर्ट स्क्रिटिक। बुरा मत मानिएगा, यह मेरा पेशा है। मुझे हर चीज पर पूरा यकीन होना चाहिए ! ये जो सो रहा है, आपका दोस्त है ?

ईवान एन्तोनोव : नहीं। वह एम० ए० है। कम से कम वह ऐसा कहता है। अगर आप उससे उसका आइ-डैन्टिटी कार्ड मांगते तो शायद बुरा न होता।

सेकोव : यह आपका कोई रिश्तेदार भी नहीं है, या है ?

ईवान एन्तोनोव : आपकी कसम, नहीं। वह रोमन बाथ की वजह से यहां सोता है। उसकी पहरेदारी करता है। वह डरता है कि मैं इसे कहीं तोड़

न दूं। ये इसकी खोज है या यों कहिए कि इस रोमन बाथ के खोजे जाने के बाद यहां पहुंचने वालों में पहला आदमी था।

[सेकोव पंजों के बल सोये हुए व्यक्ति के पास पहुंचता है, धीरे-से कम्बल हटाता है और उसके चेहरे को देखता है। वह हमाम से वापस ईवान एन्तोनोव के पास आता है]

सेकोव : यह तो एनानीव है।

ईवान एन्तोनोव : एनानीव एम० ए० है।

सेकोव : मैं चाहता हूं हमारी बातें राज की रहें। आपका क्या ख्याल है, क्या यह वाकई सो रहा है ?

ईवान एन्तोनोव : कौन जाने ? हो सकता है आखें बन्द किये पड़ा हो।

सेकोव : कुछ भी हो, हमें बातें आहिस्ता करनी चाहिए और इसके इतने नजदीक नहीं। अगर वह जाग जाय तो कह देना मैं तुम्हारा चचेरा भाई हूं और लाउकोवित से आया हूं।

ईवान एन्तोनोव : अगर मैं लाउकोवित भूल जाऊं और किसी और शहर का नाम ले दूं तो उससे क्या फर्क पड़ेगा ?

सेकोव : एक ही बात है।

ईवान एन्तोनोव : बहुत खूब !

सेकोव : इधर देखो, तुम मुझे एक होशियार आदमी लगते हो···

ईवान एन्तोनोव : चेहरे कभी-कभी धोखा दे देते हैं।

सेकोव : नहीं। तुम एक होशियार आदमी हो। तुम झंझट में फंसे हो। तुम खुद ही देखो—तुम्हारा घर तोड़ दिया गया है, तुम्हारा फर्नीचर बर्बाद हो गया है, और तुम्हारे इस अकेले कमरे के बीच में रोम के जमाने का एक ताल भी है।

ईवान एन्तोनोव : अप्सराओं की सुन्दर तस्वीरों के साथ।

सेकोव : ये तस्वीरें यहां हालत बदल नहीं सकतीं। बल्कि वो उसे और खराब बना देंगी। लूशियस और पोम्पीलियंस के जमाने का यह रोमन बाथ सही हालत में बचाकर रखा जाने वाला दुनिया में अभी तक सिर्फ एक ही है। यह अनोखा है और इस मामले में तुम्हें गलतफहमी नहीं होनी चाहिए।

ईवान एन्तोनोव : मुझे कोई गलतफहमी नहीं है।

सेकोव : यह अच्छा है। इस ताल ने अब लोगों को अपनी तरफ खींचना शुरू कर दिया है—बोयाना चर्च और कजानलुक टोम को तरह। दुनिया की बड़ी-बड़ी इल्मी हस्तियां शहद की मक्खियों की तरह भिनभिना रही हैं। यह—यह मार्कस एन्टोनियस आक्टेवियनस के स्कूल का है—यह बात मजाक की नहीं है।

ईवान एन्तोनोव : देखिए जनाब, क्या आपने बाकई सिर्फ हाई स्कूल पास किया है।

सेकोव : जनाब—तीन बार सप्लीमैण्टरी में फेल होने के बाद। लेकिन सवाल यह नहीं है कि यह रोमन बाथ एक अहम सांस्कृतिक यादगार की शक्ल में उभर कर आयेगा। यूनेस्को इसे

अपने हाथ में ले लेगा और तुम्हारे हाथ से सब खत्म हो जायेगा।

ईवान एन्तोनोव : वाकई ?

सेकोव : मुझे पूरा यकीन है। मैं यूनेस्को को जानता हूं। वो अधूरे काम नहीं करते। मैंने शुरू में ही तुमसे कहा था—तुम्हें जरा भी मौका नहीं मिलेगा। वह रसोई खोदना शुरू कर देंगे। तुम्हारा जीना खोद देंगे और फिर टट्टी तक···

ईवान एन्तोनोव : नहीं—टट्टी नहीं। क्या तुम वाकई सोचते हो कि वह खोदेंगे ? टट्टी भी ?

सेकोव : मैंने सालों यूनैस्को में काम किया है। मुझे सब मालूम है और मैं अपने आदमियों को भी जानता हूं। वह तुम्हारी टट्टी खोद डालेंगे और तुम्हें आम टट्टियों में जाना पड़ेगा। और आम टट्टियों की हालत तो तुम जानते ही हो आज-कल।

ईवान एन्तोनोव : हां···भयंकर।

सेकोव : आबदस्त के कागज (**टायलेट पेपर**) तक नहीं है। वह सड़ती है और हमेशा भरी रहती है। अब मैं क्या कहूं। कितनी दुखदाई बात है···

ईवान एन्तोनोव : (**सिर हिलाकर**) दुखदाई।(**अचानक एम०ए० को देखकर**) मेरे ख्याल से वह हिल रहा है।

सेकोव : तो लोकोवित में···(**एम० ए० की तरफ निगाह डालता है**) उसने करवट बदल ली। क्या यह वाकई सो रहा है ?

ईवान एन्तोनोव : भगवान जाने ? तुम इससे कुछ भी उम्मीद रख सकते हो।

सेकोव : (गौर से देखने के बाद) मेरा ख्याल है कि वह सो रहा है। और उनके बारे में भयंकर बात यह है कि वह काम नहीं करती।

ईवान एन्तोनोव : कौन ?

सेकोव : यही आम टट्टियां। उनका हमेशा मुआयना होता रहता है। वह मुआयना क्या करते हैं ? आराम करते हैं। जरा सोचो—तुम भाग रहे हो, तुम्हारी अन्तड़ियां जोर मार रही हैं और वह आराम कर रहे हैं। नहीं, यह वाक़ई भयंकर है।

ईवान एन्तोनोव : यक़ीनन तुमने एक खौफनाक नजारा खींचा है। मैं थर्रा रहा हूं।

सेकोव : जलजले भी कुछ नहीं। तुम्हें लात मारकर भगा देंगे।

ईवान एन्तोनोव : (अनजाने में) कैसे ?

सेकोव : (दिखाते हुए) इन गुदड़ों की तरह।

ईवान एन्तोनोव : तुम्हारे ख्याल से क्या वह इतना आगे बढ़ जायेंगे ?

सेकोव : सब मेरी आंखों के सामने घूम रहा है। मैं छोटी से छोटी बात तक तुम्हें बारीकी से बता सकता हूं।

ईवान एन्तोनोव : तो वह मुझे दूसरा मकान देंगे। वह मुझे मुआवज़ा देंगे।

सेकोव : (हंसकर) एन्तोनोव, एक होशियार आदमी होने पर भी तुम्हें रहने के मसले का अन्दाज़ नहीं है। तुम 'घूस' शब्द तक से नफरत करते हो, नौकरशाही से उकता गए हो, किसी भी

चीज को पाने के लिए तुम नाक रगड़कर अपने मालिक के तलुए नहीं चाटोगे। मुझे बताओ, जिसके हाथ में रहने का मसला हो उसके तलुए चाटोगे ?

ईवान एन्तोनोव : क्यों चाटूंगा ?

सेकोव : अगर तुम सरमायेदार होते या तुम्हारे पास पैसा होता, तो बात दूसरी थी, तब मैं सलाह भी न देता। तब तुम अपने गांव में ताज़ा हवा में रहने जा सकते थे। लेकिन तुम एक बुद्धि-जीवी हो, तुम्हारे पास कुटिया तक नहीं है। तुम यह मानो कि तुम्हारे पास कुटिया नहीं है।

ईवान एन्तोनोव : मैं मानता हूं।

सेकोव : देखा ! तुम बर्बाद हो गए। इसीलिए मैं यहां आया हूं। यह बताओ कि उसका वो कान दूसरे से बड़ा है ना, लगता है कान खुजला रहा है और सुन रहा है ?

ईवान एन्तोनोव : (**देखते हुए**) कौन सा कान ?

सेकोव : जो तुम्हारी तरफ है।

ईवान एन्तोनोव : लेकिन दूसरा कान दिखलाई नहीं दे रहा इस-लिए दोनों को मिला नहीं पा रहा हूं।

सेकोव : ख़ैर। तो जनाब मुख्तसिर में यह हालत है। तुम्हारा मकान ले लिया जायेगा और तुम्हें सड़क पर छोड़ दिया जाएगा।

ईवान एन्तोनोव : मुझे यकीन नहीं आता। बुरे से बुरा यह होगा कि वह मुझे दूसरा फ्लैट तो देंगे।

सेकोव : ज्यादा से ज्यादा उसके लिए तुमसे वायदा

कर देंगे ऐसे वायदे वह हजारों से कर चुके हैं, लेकिन जहां तक देने का सवाल है···रहने का मसला, एन्तोनोव, एक ऐसा मसला है जिसका कुछ लोगों के लिए कोई हल नहीं।

ईवान एन्तोनोव : लेकिन मैं···

सेकोव : हां, मैं जानता हूं तुम लड़ोगे, तुम शिकायत करोगे, तुम शिकायतें लिखोगे, तुम दफ्तरों के धक्के खाओगे। और तुम ऐसे मकान में रहोगे जिसका किराया वाजबी नहीं होगा। और जोकि तुम्हें गुलाम बना देगा—एक कमरे और रसोई का किराया होगा एक सौ पच्चीस लीवा। और अलग-अलग मंजिलों पर रुकने वाली लिफ्ट हुई तो तुम्हें एक सौ चालिस लीवा देने पड़ेंगे !

ईवान एन्तोनोव : काहे के लिए ?

सेकोव : ऐसा कानून है। कुछ फीसदी तुम्हारे जज्बातों का, कुछ फीसदी तुम्हारे रोंगटे खड़े कर देने वाले तजुर्बों (अनुभवों) का, कुछ फीसदी शानदार इमारत का और कुछ फीसदी लिफ्ट का···लोकोवित में सब ठीक है। हमारी चाची ने तुम्हें प्यार भेजा है और वह पूछ रही थी कि तुम उधर कब जाओगे, वह तुमसे मिलना चाहती हैं···

(एम० ए० उनके पीछे हिलता सा दिखाई देता है और सेकोव की चौकन्नी नजर उस पर रहती है। वह एन्तोनोव की तरफ आँख मार

कर इशारा करता है लेकिन ईवान एन्तोनोव समझ नहीं पाता)

ईवान एन्तोनोव : कैसी चाची ? कौन सी चाची ?

सेकोव : अच्छा भइया, मैं अब चलता हूं···

(ईवान इसकी तरफ देखता है, बिलकुल विमूढ़ सा, फिर पीछे घूमता है, एम० एम० को देखता है और फिर उसे स्थिति का एहसास होता है)

सेकोव : अच्छा, मुझे कुछ दूर तक छोड़ आओ क्योंकि इन तंग गलियों में मैं रास्ता भूल जाऊंगा।

(दोनों बाहर चले जाते हैं। अब वह एक सड़क पर हैं और एक टैक्सी बुलाने वाले कौलम के पास आकर रुकते हैं। सेकोव उस पर सहारा लेकर खड़ा हो जाता है)

सेकोव : मुझे कुछ नहीं चाहिए। मैं सब छोड़ने को तैयार हूं।

ईवान एन्तोनोव : तुम क्या छोड़ने को तैयार हो ?

सेकोव : एन्तोनोव, तुम एक होशियार आदमी हो। अब तुम्हारे पास कोई मौका नहीं है। यह रोमन बाथ तुम्हें बर्बाद कर देगा। वो तुम्हारा घर ले लेंगे, यह बात सौ फीसदी सही है। इस घाटे के सौदे को फायदे में बदलने के लिए तुम्हारे लिए सिर्फ एक ही रास्ता है।

ईवान एन्तोनोव : कैसा रास्ता ?

सेकोव : मुझ पर यकीन रक्खो। आज पश्चिम के बुद्धिमान लोग—बुद्धिमान से यहां मेरा मतलब है पैसे वाले—अपनी पूंजी हज़ारों में

इन्हीं खूबसूरत चीजों में लगाते हैं जैसे पुरानी तस्वीरें, सिक्के, पुराने बर्तन···इनकी कीमत कभी नहीं गिरती, उल्टे बढ़ती ही है। उस कला के टुकड़े को ना खाना चाहिए, ना पानी। वह चुपचाप कोने में खड़ा अपनी बढ़ती हुई कीमत देखता रहता है। और अभी तक कीमतें बढ़ी ही हैं, एन्तोनोव, बेतहाशा बढ़ी हैं। और आज आदमी को क्या चाहिए? पैसा। पैसे से खुशहाली हो यह जरूरी नहीं है, लेकिन अगर पैसा न हो तो खुशहाली हो ही नहीं सकती।

ईवान एन्तोनोव : तो क्या हुआ? क्या तुम मुझे जिन्दगी का सबक सिखा रहे हो?

सेकोव : थोड़े में यों ही समझ लो। इसी खुदी हुई जगह पर रहने का क्या फायदा, जहां और अभी खुदाई होने वाली है? लेक कोमों के किनारे क्यों नहीं रहते? तुम एक होशियार आदमी हो, हो ना?

ईवान एन्तोनोव : तुम समझते हो कि मेरा लेक कोमों के किनारे रहना ही काफी है, समझते हो ना?

सेकोव : दूसरों के लिए नहीं पर तुम्हारे लिए इतना ही काफी है। बिलकुल काफी। देखो एन्तोनोव मैं तुम्हें लेक कोमों के किनारे एक सुन्दर से तुम्हारे अपने मकान में तुम्हें देखना चाहता हूं। या फिर स्विट्जरलैण्ड में एक अच्छे बैंक के खाते के साथ। स्विट्जरलैण्ड में भी कई झीलें हैं। और तुम्हें क्या चाहिए—वो लेक

कामो से घटिया नहीं।

ईवान एन्तोनोव : यह क्या लेक कोमो की रट लगा रक्खी है? कहीं ये पंचारीको लेक तो नहीं है? मैं लेक कोमो जाऊंगा कैसे?

सेकोव : (इधर-उधर देखते हुए) रोमन बाथ को यहां से हटाकर।

ईवान एन्तोनोव : क्या? यहां से हटाकर? वाह! कहां पर?

सेकोव : बाहर! इटली में। वहां से दूसरे लोग इसे ले जायेंगे, शायद अमरीकी लोग। वह आजकल बहुत मालदार हैं। उसकी तुम चिन्ता मत करो। लूशियस और पाम्पीलियन के जमाने के अकेले इस रोमन बाथ का खरीदार हमें मिल जायेगा। साथ में इन अप्सराओं का भी। इनकी वजह से हम उन्हें निचोड़ लेंगे – उनकी हम खाल उतार लेंगे। उनके पास पैसा है।

ईवान एन्तोनोव : लेकिन इसे हम ले कैसे जायेंगे? यह मेरे रहने वाले कमरे के अन्दर है—है ना?

सेकोव : क्योंकि वह तुम्हारे रहने के कमरे में है इसी-लिए। एक बार यह म्यूज़ियम में चला जाय, बस फिर ठीक। सरकारी खजाने की तरह इसकी देख-रेख होगी। पेश्तर इसके कि वो इसके बारे में कुछ सोचें, हमें बहुत जल्दी काम करना है। वो सुस्ती से काम करते हैं, चिट्ठी-पत्री, सवाल-जवाब, गुज़ारिश, फिर तुम्हारी चिट्ठी फिर उनकी गुजारिश···इसी बीच हम चालाकी खेल डालेंगे। एन्तोनोव तुम चिन्ता मत करो मैं सालों से ऐसे काम करता

आया हूं। बस तुम यह समझ लो कि मैं बलगारिया की आधी से ज्यादा चीज़ें बाहर भेंज चुका हूं। जो खण्डरात मैंने बाहर भेजे हैं अगर उन सबको एक जगह इकट्ठा किया जाये, तो तुम यकीन नहीं करोगे कि उन सब को मिलाकर एक खूबसूरत मक़बरा तैयार हो जायेगा। अगर रोडोप्स के उस रोमन मकान को वह बारूद से न उड़ा देते तो मैं उसको भी बाहर बेच देता। लेकिन मेरे वहां पहुंचने तक कुछ भी बाकी नहीं बचा।

ईवान एन्तोनोव : तो तुम इसमें···

सेकोव : जनाब, मैं ऐसी ही फनकारी (**कलात्मक**) चीजों की खरीदोफरोख्त करता हूं (**चीजों का व्यापार करता हूं**) मूर्तियां, मुश्किल से मिलने वाली थेशियन और रोमनों के जमाने की पुरानी किताबें···जो कुछ भी हाथ लगे। लेकिन रोमन बाथ के मुकाबले ये सब बहुत छोटी चीजें हैं। रोमन बाथ एक बड़ा सौदा है, मैं इसके लिए तुम्हें कम से कम दस करोड़ दिलवाऊंगा, मैं उन्हें इससे कम दामों पर नहीं लेने दूंगा। फिर उसके बाद लेक कोमो।

कौलम : (**अचानक बोलते हुए**) लेक कोमों के लिए इतना काफी है—बोलते जाओ।

सेकोव : (**घबराकर इधर-उधर देखता है**) क्या तुमने कुछ कहा ? मुझे लगा कि जैसे कोई बोला···

ईवान एन्तोनोव : लेकिन, सेकोव, उस हालत में हमें रोमन बाथ

को तोड़ना पड़ेगा और उसे टुकड़ों में ले जाना पड़ेगा।

सेकोव : हम उसके टुकड़े-टुकड़े कर देंगे, एन्तोनोव, उसे केक की तरह काट डालेंगे।

ईवान एन्तोनोव : अगर काटते वक्त वह मिट्टी-मिट्टी हो गया तो ?

सेकोव : नहीं होगा। इसे काटने की साइन्स को मैं जानता हूं—मेरे पास रिसाले आते हैं। लोगों ने बड़े-बड़े मन्दिर काट दिये हैं—क्या हम रोमन बाथ से नहीं निपट पायेंगे। हम इसे काटेंगे और बाहर भेज देंगे।

कौलम : अगर उन्होंने तुम्हें पकड़ लिया तो ?

सेकोव : **(जहां खड़ा है वहीं गड़ा-सा रह जाता है, चारों तरफ होशियारी से देखता है)** फिर वही आवाज। एन्तोनोव कहीं तुमने अपनी आवाज तो नहीं बदल ली ?

ईवान एन्तोनोव : नहीं तो, मुझे तो नहीं लगा।

सेकोव : अभी किसी ने पूछा, "अगर उन्होंने तुम्हें पकड़ लिया तो।"

ईवान एन्तोनोव : मैं कुछ और सोच रहा था।

सेकोव : यह मेरा ख्याल नहीं—वह आवाज थी।

ईवान एन्तोनोव : देखो सेकोव, रोमन बाथ बहरहाल सियासत की जायदाद है।

सेकोव : सियासत की क्यों ? क्या उन्होंने बनाई थी ?

ईवान एन्तोनोव : लेकिन ऐसा कानून है।

सेकोव : मुझे मालूम है। लेकिन उन्होंने किस कानून से तुम्हारा कमरा खोदा ?

ईवान एन्तोनोव : वह तो महज एक हादसा था।

सेकोव : हादसा नाम की कोई चीज नहीं होती। हादसे सिर्फ लोगों की शादियां होती हैं।

[ईवान एन्तोनोव विचारमग्न है और शान्त है। सेकोव उसकी ओर देख रहा है —उत्सुकता से]

सेकोव : जाओ, बेवकूफ मत बनो। तुम समझदार आदमी समझे जाते हो—हो ना ? तुमने रोमन बाथ पर कितना दिमाग खर्च किया है, तुम्हारे बारे में कौन सोचेगा ? कितने कीमती खण्डहर और रोम के जमाने की शानदार बस्तियां बुलडोजरों से ढाह दी गई हैं ? कितनी ही खूब-सूरत इमारतें बारूद से उड़ा दी गईं, कितनी रंगशालाओं (**नेशनल थिटयेरों**) को काट डाला गया—और अब रोमन बाथ के लिए इतना तमाशा ! मुझे क्या जरूरत पड़ी है जो इतनी इसकी भलाई सोचूं ! कम से कम हम आने वाली नस्लों के लिए इसे बचायेंगे। यह बरबाद नहीं होगा, यह म्यूजियम में रखा जायेगा। हम कला के इस काम को बचाकर रखेंगे। कला के बारे में सोचो एन्तोनोव, आर्ट के बारे में सोचो। यह एक पाक ख्याल है—इट इज ए नोबल काज। साथ ही तुम्हें रकम भी अच्छी मिलेगी। एक टुकड़े का दाम पांच सौ हजार डालर होगा।

कौलम : माफ कीजिए मैंने रकम ठीक से नहीं सुनी। क्या तुमने पांच सौ डालर बोला ?

सेकोव : कितनी बढ़िया बात है ! अब कौलम भी बात करने लगे ।

ईवान एन्तोनोव : ओह, यह तो बहुत देर से बात कर रहा है।

सेकोव : आओ यहां से खिसक चलें, वरना·····

कौलम : बीस फीसदी । बीस फीसदी मेरे ! अगर मुमकिन हो तो वो भी स्विसफ्रैन्क में ! डालर का भाव चढ़ता-उतरता रहता है ।

सेकोव : जौंक की तरह कोई-न-कोई पीछे लगा हुआ है । मुझसे फीसदी की बात करता है। सुनो, एन्तोनोव, इससे सबक लो । सिर्फ कौलम ही तो है, लेकिन तुमसे जल्दी समझता है ।

ईवान एन्तोनोव : मशीन ने इन्सान की जगह पूरी तरह ले ली है ।

सेकोव : **(बेचैनी से इधर-उधर देखते हुए)** एन्तोनोव, सोचो, मना करके हाथ से मत जाने दो। तुम्हारे लिए यह एक ही मौका है ।

कौलम : हम टैक्सी में जायेंगे ।

सेकोव : ठीक है, मैं चला । फिर आऊंगा । किसी और के चक्कर में मत फंस जाना तुम लुट जाओगे । जल्दी सोचना । वक्त बरबाद मत करना **(सेकोव बाईं तरफ भागता है)**

कौलम : ऐ, कहां चले ऐं···

सेकोव : अच्छा-अच्छा···हां-हां ठीक है ।

(चला जाता है)

[ईवान एन्तोनोव अपने खुदे हुए कमरे में फिर दाखिल होता है । एम० ए० बिजली

के रेजर से शेव बना रहा है, रेडियो चल रहा है]

ईवान एन्तोनोव : जाने से पहले दो लेवा और पचास स्तोन्तुकी देना मत भूलना, एक रात यहां गुजारने का। रोमन बाथ का दाम दस फीसदी रखा है।

एम० ए० : जाने की कौन सोच रहा है ? मेरा काम तो अभी शुरू ही नहीं हुआ है।

ईवान एन्तोनोव : अगर मैं तुम्हें बाहर फेंक दूं तो ?

एम० ए० : तुम नहीं फेंक सकते। मैं जूडो जानता हूं।

ईवान एन्तोनोव : (**चिल्लाकर**) लेकिन तुम किस बुनियाद पर मेरे कमरे में रुके हुए हो ? इस घर पर मेरा कानूनी हक है।

एम० ए० : मुझे जीना और टट्टी की खुदाई शुरू करने का हुक्म मिला है। (**एक चिट्ठी एन्तोनोव को पढ़ने के लिए देता है**)

ईवान एन्तोनोव : (**पढ़ते हुए**) इसके ऊपर तो सरकारी सील भी लगी है···लेकिन ये मेरा निजी मकान है··· ये कैसे मुमकिन है ?

एम० ए० : लेकिन ये तबारीखी जगह है। और तुमने इस खत में देखा होगा कि इसकी खुदाई का मुझे हक हासिल है।

ईवान एन्तोनोव : लेकिन मैं शिकायत दर्ज करूंगा।

एम० ए० : जरूर करो। इसके लिए तुम्हें पूरे दो महीने लगेंगे। तुम्हारी शिकायत को सुनने के लिए पहले साइंटिफिक काउंसिल की मीटिंग होगी, उसके बाद कमीशन बैठाया जायेगा, कमीशन इसकी गहराइयों तक पहुंचने के लिए एक

महीना लेगा और फिर किसी नतीजे पर पहुंचने के लिए दो महीने और लगेंगे·····

ईवान एन्तोनोव : दो क्यों ?

एम० ए० : वो अकादमी के आदमी हैं। एक या दो दिन में फैसला नहीं कर सकते। उनके पास बहुत से काम हैं आज यहां, तो कल बर्लिन किसी कान्फ्रेंस में, और उसके बाद परसों इटली में किसी सिम्पोजियम में। और उसके बाद अगर फैसला तुम्हारे हक में हो गया तो मैं साठ पेजों की दलीलें देकर उसमें अड़चनें डालूंगा। पहले कमीशन उस पर सोचेगा फिर साइंटिफिक काउंसिल की बैठक होगी और···

ईवान एन्तोनोव : (**गुस्से से बीच में ही काट कर**) जानबूझकर खून करने के अंजाम को जानते हो ? खूनी जब अपने जुल्म का इकरार कर ले तब उसका अंजाम भी जानते हो।

एम० ए० : मैं तुम्हें ऐसा करने की सलाह नहीं दूंगा। और मेरा खून आम लोगों के खून से मिलता है मैं काफी चुस्त हूं। अगर तुमने खून करने की कोशिश की तो मामला और पेचीदा हो जायेगा।

ईवान एन्तोनोव : तुम्हारा इख़लाख है ?

एम० ए० : मेरे पास यूनिवर्सिटी की डिग्री है।

ईवान एन्तोनोव : (**चिल्लाकर**) कम-से-कम मुझे नया घर तो दो।

एम० ए० : लेकिन मैं हजार साल पुरानी चीजों से वास्ता रखता हूं।

ईवान एन्तोनोव : एक नौजवान आदमी, जो आम जिंदगी जीना चाहता है सिर्फ आम जिंदगी और कुछ नहीं, उससे कौन वास्ता रखता है ?

एम० ए० : (**कंधे उचकाकर**) मुझे नहीं मालूम। ये मेरा काम नहीं है। इसके लिए सरकार से बात करो।

[ठीक इसी समय लाइफ गार्ड कमरे में दाखिल होता है। एक नौजवान व्यक्ति यूनिफॉर्म पहने है]

लाइफ गार्ड : क्या ताल यहीं पर है ?

ईवान एन्तोनोव : वो रहा, वहां पर।

एम० ए० : (**सख्ती से**) किस ताल की बात कर रहे हो ?

लाइफ गार्ड : जिसके बारे में हमने टी०वी० पर सुना था। मुझे इस नये ताल का लाइफ गार्ड एपाइंट किया गया है।

एम० ए० : क्या एपाइंट किए गये हो ?

लाइफ गार्ड : लाइफ गार्ड। हर ताल या समन्दर और जहाँ कहीं भी पानी होता है, वहां एक लाइफ गार्ड होता है हम अपने भाइयों की जान बचाते हैं।

एम० ए० : भाइयों की जान बचाते हो ?

लाइफ गार्ड : भाई बहुत कीमती चीज़ होती है ये हमारी जिन्दगी बचाने वाली किताब में लिखा है

(कुछ देर के लिए बाहर जाता है)

एम० ए० : इस जगह कोई नहीं नहायेगा। और न ही यहां तैरेगा।

लाइफ गार्ड : **(हाथ में बन्द करने वाला केनवेस का एक स्टूल और धूप से बचने का चश्मा और कवर**

लिये दाखिल होता है) कैसा है ?

ईवान एन्तोनोव : देख नहीं रहे, इसमें कोई नहीं डूब नहीं सकता ?

लाइफ गार्ड : लोग तो चुल्लू भर पानी में डूब मरते हैं। (**कवर फर्श पर बिछाता है और स्टूल पर बैठता है।**)

एम० ए० : जरूर कहीं कुछ गलती हुई है। यह तैरने की जगह नहीं है, यह रोमन बाथ है—सदियों पुराना और एक अच्छी कल्चर का नमूना।

लाइफ गार्ड : (**जेब बजा कर**) मेरा एपाइन्टमैन्ट आर्डर मेरी जेब में है।

एम० ए० : चाहे कुछ भी हो। इसमें पानी नहीं भरा जायेगा। यहां रिसर्च का काम जारी रहेगा।

लाइफ गार्ड : इससे मुझे कोई मतलब नहीं। मेरा काम लोगों की जान बचाना है।

एम० ए० : यहां लाइफ गार्ड की कोई जरूरत नहीं है।

लाइफ गार्ड : शायद है।

एम० ए० : हम देखेंगे.....

लाइफ गार्ड : जबकि आजकल गर्मियों में तैरने का मौसम है, हज़ारों तैराकियों को तैरने की ट्रेनिंग दी जाने की आवाज़ उठाई जा रही है, आप यह ताल बन्द करने की सोच रहे हैं ? खास तौर से उस वक्त जबकि हमारे यहां तैराकियों की इतनी बुरी हालत है।

ईवान एन्तोनोव : (**डरकर**) आप यहां तैराकियों को ट्रेनिंग देंगे, क्यों ?

एम० ए० : इस मसले में अहम बात यह·····कोई मसला-वसला नहीं।

लाइफ गार्ड : सवाल उसूल का है। जब उन्हें पता चलेगा कि ताल तैरने के लिए बन्द किया जा रहा है, तो वह आपकी बात नहीं सुनेंगे। चाहे ये ताल रोमन हो या हंगेरियन। जहां तक ताल का सवाल है हमारी हालत बहुत खराब है।

एम० ए० : हम देखेंगे।

लाइफ गार्ड : तुम बेकार अपना वक्त बरबाद करोगे। मैं यह बात एक दोस्त के नाते कह रहा हूं। अगले ओलम्पिक में दस गोल्ड मैडल हमें हासिल करने हैं। यह वायदा हम कर चुके हैं।

एम० ए० : ना तो हमें दोस्ती की चिन्ता है और ना ही ओलम्पिक की। अगर तुमने इसमें एक बूंद भी पानी डाला तो मैं तुम पर मुकद्दमा कर दूंगा और तुम्हें कोई नहीं बचा पायेगा। मेरा नाम ऐनानीव है, ऐनानीव एम० ए०। याद रखना—भूल मत जाना। **(अपना ब्रीफ केस उठाता है और चला जाता है।)**

लाइफ गार्ड : **(एन्तोनोव की तरफ पलटकर)** क्या आप भी एम० ए० हैं?

ईवान एन्तोनोव : नहीं, मैं ईवान एन्तोनोव हूं।

लाइफ गार्ड : ताल से आपका भी कुछ वास्ता है?

ईवान एन्तोनोव : नहीं। बदकिस्मती से मैं इस घर में पैदा हुआ था। इसी में जहां मैं अब रहता हूं।

लाइफ गार्ड : **(कमरे में घूमता हुआ जैसे कुछ तलाश कर**

रहा हो)अच्छा— क्यों ? घर तो बुरा नहीं है। मुझे पसन्द है।

ईवान एन्तोनोव : हम दोनों की पसन्द एक ही है। मुझे भी बहुत पसन्द है। लेकिन अब उन्होंने खोद दिया है।

लाइफ गार्ड : उनका काम ही खोदना है, सब जगह खुदाई। जब सड़क नहीं खोदते, तब घर खोदना शुरू कर देते हैं। चिन्ता की कोई बात नहीं।

ईवान एन्तोनोव : नहीं-नहीं, अब चिन्ता की कोई बात रही ही नहीं।

लाइफ गार्ड : हां—यहां—शायद। एन्तोनोव, क्या थोड़ा वक्त मुझे दे सकते हो ?

[दोनों बाहर जाते हैं। एक ही सैकण्ड में ईवान एन्तोनोव की आवाज सुनाई देती है जिससे जाहिर है कि वह किसी चीज़ पर आपत्ति उठा रहा है। "नहीं, नहीं, मेहरबानी करके ऐसा मत करो।" ऐसी आवाज़ें आती रहती हैं। थोड़ी देर में दोनों एक लोहे की मीनार-सी लेकर आते दिखाई देते हैं, ऐसे ही जैसे कि काले सागर पर समुद्र के किनारे जगह-जगह मीनारें पाई जाती हैं। मीनार के ऊपर एक झंडा लगाने का स्थान बना है। दोनों ताल के सामने खड़े हो जाते हैं।]

ईवान एन्तोनोव : लेकिन ये मीनार क्यों ?

लाइफ गार्ड : बात यह है, कि इसे रखें कहां ? (**विचार-मग्न इधर-उधर देखता है**) मीनार खाते में दर्ज है। इसके बिना काम नहीं चल

सकता। इससे अच्छा दिखाई देता है, ये··· यहां····· ।

ईवान एन्तोनोव : देखो, क्या तुम संजीदगी·····

लाइफ गार्ड : नहीं—यहां खिड़की नहीं है, हमें खिड़की के सामने रखना चाहिए (**दूसरी जगह खिड़की के सामने ले जाता है**) ये···यहां···ठीक है।

ईवान एन्तोनोव : नहीं-नहीं, यहीं तो मैं पलंग बिछाता हूँ ! तुम सुन रहे हो ?

लाइफ गार्ड : (**ईवान एन्तोनोव के एतराज के बावजूद उसी स्थान पर रख देता है**) वाह—क्या बात है !

ईवान एन्तोनोव : देखो, मैं तैराकी खेल के ख़िलाफ नहीं हूं—लेकिन मैं यह नहीं चाहता कि तुम मेरे रहने के कमरे ही में हज़ारों लोगों को ट्रेनिंग दो।

लाइफ गार्ड : क्यों ?

ईवान एन्तोनोव : अब मैं तुम्हें कैसे बताऊं, कभी मैं सोता हूं··· कभी मैं अकेला रहना चाहता हूं·····मैं काम करता हूं·····मैं तैराकियों के लिए रोड़ा बन जाऊंगा।

लाइफ गार्ड : चिंता मत करो एन्तोनोव। मुकाबला करने वालों को शोरोगुल का आदी होना जरूरी होता है। उनको आदी होने दो।

ईवान एन्तोनोव : मैं अपनी खुद की आदत के बारे में ज्यादा परेशान हूं।

[लाइफ गार्ड डोले के ऊपर, जो कि रोमन बाथ के ऊपर बना है, चढ़ जाता है। अपने हाथ फैलाता है जैसे कि मीनार से गोता लगाने जा रहा हो।]

ईवान एन्तोनोव : नहीं-नहीं, यह आदमी गोता लगाने जा रहा है (**रोमन बाथ में छलांग लगाता है**) मुझे कुछ करना चाहिए। नहीं तो कल छठा अमेरिकी बेड़ा इस रोमन बाथ में दिखाई देगा।

(पटाक्षेप)

दूसरा अंक

[ईवान एन्तोनोव के रहने का वही कमरा। अपनी पुरानी अवस्था में : रोमन बाथ के चारों ओर एक डोला बंधा है, फर्श खुदे हुए हैं, फर्श में इधर-उधर छेद बने हैं, डोले की नलकियों पर सफेद रंगी हुई तख्तियां टांग दी गई हैं। रोमन बाथ पर भी एक तख्ती टंगी है। एम० ए० खुदाई का काम जारी रखते हुए एक छेद में घुसा खोद रहा है। कमरे के बीच में बाथ के पीछे की ओर लाइफ गार्ड की मीनार खड़ी है। मीनार की चोटी पर एक सफेद झंडा लहलहा रहा है। निचले हिस्से में, एक काली तख्ती लटक रही है जिस पर छः लाइनें चाक से लिखी हैं। मीनार के ऊपर एक खूबसूरत रंगीन छतरी लगी है, नीचे पट्टियों की ओर एक ग़रारी है जिसमें रस्सी लिपटी हुई है।

जाल में गोले बंधे हैं, लाल रंग की सुरक्षा पेटियां हैं, भुनगे सारे कमरे में छितरे पड़े हैं। पीले रंग के तैराकी कपड़े पहने लाइफ गार्ड मीनार पर बैठा दूरबीन से कुछ देख रहा है। नीचे लटकता हुआ ट्रांजिस्टर बज रहा है।]

लाइफ गार्ड : ईवानोव, लोगों के यहां प्याज़ का भुर्ता बन रहा है। एनानीव, तुम्हें प्याज़ का भुर्ता पसन्द है?

एम० ए० : (**बिना जवाब दिये खोदता जाता है**)

लाइफ गार्ड : पांचवीं मंजिल पर लड़की के यहां फिर महमान आये हैं। वह परदा खींच रही है। ये पढ़ाई कब करते हैं, एनानीव ?

एम० ए० : (**चुपचाप खोदता जाता है**)

लाइफ गार्ड : (**दूरबीन से देखना जारी रखते हुए**) दिलेबा ने अभी फिर एक प्लेट तोड़ दी। (**काली तख्ती पर एक सफेद लाइन खींचता है**) इस हफ्ते की सातवीं प्लेट। फूहड़ औरत···चौथी मंजिल पर कुछ खास नहीं है; एक बूढ़ी औरत सेब चबा रही है।···तुम्हें सेब पसन्द है, एनानीव ?

एम० ए० : (**बिना ध्यान दिये खोदता जाता है**)

लाइफ गार्ड : (**दूरबीन को गले में लटकता छोड़कर**) तुम्हारी नज़रों में लाइफ गार्ड की कोई अहमियत नहीं है, एनानीव ? तुम अपने आपको समझते क्या हो ? आखिर वह भी इन्सान हैं।

एम० ए० : (**बिना कोई उत्तर दिये खोदता जाता है**)

लाइफ गार्ड : तुम अजीब आदमी हो ? तुम मुझसे बात भी

नहीं करना चाहते ! क्यों ?

एम० ए० : **(लाइफ गार्ड की तरफ पीठ करके खोदने लगता है)**

लाइफ गार्ड : (कुछ क्षण उसे देखकर) तुम तो हैमलेट की तरद खोद रहे हो !

एम० ए० : **(रुककर, माथे से पसीना पोंछते हुए)** क्या बेहूदगी है ।

लाइफ गार्ड : बेहूदगी क्यों ? मैंने फिल्म देखी है—उसमें भी ऐसा ही था। लेकिन वहां एक खोपड़ा था।

एम० ए० : और यहां एक लाइफ गार्ड है। ऐसे ताल पर जहां पानी नहीं और जिसकी लम्बाई-चौड़ाई सिर्फ दस मीटर है।

लाइफ गार्ड : और जिसकी हिफाज़त के लिए लाइफ गार्ड को नौकरी पर रखा गया है ।

एम० ए० : तुम आम लोगों का पैसा हड़प रहे हो।

लाइफ गार्ड : हम हड़पते हैं लेकिन लोगों की जान तो बचाते हैं जबकि तुम सिर्फ खोदते हो ।

एम० ए० : अगर तुम सच्चे लाइफ गार्ड हो तो तुम्हें आम तालों पर जाना चाहिए। वहां, जहां कम-से-कम पानी तो हो । तुम कह देना कि कोई ग़लती हुई है या कोई ग़लतफहमी हुई है।

लाइफ गार्ड : मुझें इसी जगह के लिए भर्ती किया गया है। तुम चाहते हो कि मैं चला जाऊं और अपनी तरफ से नौकरी छोड़ दूं। इस्तीफा दे दूं ?

एम० ए० : एक असली लाइफ गार्ड तो ऐसा ही करेगा।

लाइफ गार्ड : इस्तीफा सरमायदारों की खुन्दक होता है। इस

मुल्क में कोई स्तीफा नहीं देता। क्या तुमने किसी को स्तीफा देते सुना है? नहीं सुना होगा। और ना ही सुनोगे तो मैं ही क्यों पहल करूं?

[इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं मिलता। क्योंकि इसी समय दायमनदीव अन्दर आता है। वह धीरे-धीरे नपे-तुले पांव से चलकर आता है और एक टक रोमन बाथ की ओर देख रहा है। वह एम० ए० और लाइफ गार्ड की ओर कोई ध्यान नहीं देता। एम० ए० और लाइफ गार्ड दोनों चुप खड़े दायमनदीव की ओर देख रहे हैं। वह रोमन बाथ के नजदीक पहुंचता है और ताल पर झुकता है]

लाइफ गार्ड : **(जोरों से सीटियां बजाता है)** ताल पर मत झुको।

[दायमनदीव पीछे हटता है और रोमन बाथ के अन्दर उतरने का प्रयास करता है]

एम० ए० : **(तेजी से)** माफ करना, तुम क्या चाहते हो?

दायमनदीव : आपकी तारीफ?

एम० ए० : मेरा ख्याल है पहले तुम्हें अपना नाम बताना चाहिए।

दायमनदीव : क्या आप ईवान एन्तोनोव हैं?

एम० ए० : मेरा नाम एनानीव, एनानीव एम० ए०। यहां की खुदाई का मुखिया। बाहरी आदमियों को इस इलाके में आना मना है।

दायमनदीव : क्या यह ताल वाक़ई रोम के जमाने का है?

एम० ए० : क्या तुम मुझसे यही पूछने आये हो ?

दायमनदीव : मैं ईवान एन्तोनोव से मिलने आया हूं। जो इस घर का मालिक है।

एम० ए० : क्या काम है ?

दायमनदीव : मेरा अपना निजी काम है।

एम० ए० : फिर तुम रोमन बाथ के बारे में क्यों पूछ रहे हो ?

दायमनदीव : क्यों न पूछूं ?

लाइफ गार्ड : कामरेड एन्तोनोव तशरीफ ला रहे हैं। **(ईवान एन्तोनोव बावर्ची की पोशाक पहने दाखिल होता है)**

लाइफ गार्ड : कामरेड एन्तोनोव, यह साहब आपको पूछ रहे हैं।

ईवान एन्तोनीव : (**दायमनदीव से**)कहिये जनाब, कैसे हैं ? और वह ऊदबिलाऊ कहां हैं ?

दायमनदीव : कैसे ऊदबिलाऊ ? (**ताल की तरफ और अन्य सूराखों को** घूर कर देखता है)

ईवान एन्तोनोव : (**लाइफ गार्ड से**) क्या इन्हें सरकस वालों ने भेजा है ? (**दायमनदीव से**) क्या आपको सरकस वालों ने तो नहीं भेजा ?

दायमनदीव : नहीं।

ईवान एन्तोनोव : शुक्र है ! एक आदमी जो ऊदबिलाऊ को ट्रेनिंग देता है मुझे पूछ रहा था। वह ताल को किराये पर लेना चाहता है अपने आपको खुश रखने के लिए मुझे ऊदबिलाऊ की सख्त जरूरत है।

दायमनदीव : मेरा नाम दायमनदीव है, मुझे तुमसे बातें करनी हैं।

ईवान एन्तोनोव : ठीक करो !

दायमनदीव : बात राज़ की है।

ईवान एन्तोनोव : (**बाएं जाते हुए**) जितने राज़ की तुम चाहो।

सेकोव : (**अचानक फर्श के एक छेद में से अपना खोपड़ा निकालकर**) एन्तोनोव, मत मानना। (**फिर सिर अन्दर कर लेता है**)

[दोनों इधर-उधर देखते हैं। एन्तोनोव हक्का-बक्का सा बाईं ओर बढ़ जाता है। दायमनदीव कुछ बोलने ही वाला है कि अचानक एम० ए० दूसरे छेद से सिर बाहर निकालकर देखता है। ईवान एन्तोनोव सोचता है कि किधर जायें। वह दायमनदीव को सुझाव देता है कि उन्हें रोमन बाथ की दूसरी ओर डोले पर चढ़कर बातचीत करना चाहिए]

ईवान एन्तोनोव : खेलकूद से सेहत ठीक रहती है।

दायमनदीव : मेरे साथ·····(**रुकता है। क्योंकि वह देख रहा है कि ईवान एन्तोनोव उसकी ओर कुछ इशारा कर रहा है क्योंकि एम० ए० नीचे छेद में से सिर निकालकर उसकी ओर देख रहा है।**)

[ईवान एन्तोनोव इशारा करता है, इधर उधर देखता है और दायमनदीव को इशारे से तख्ती पार करके दूसरी ओर जाने को कहता है और पलंग पर बैठने को कहता है जो कि डोले के पास पड़ा है और जमीन से दो मीटर ऊंचा है]

ईवान एन्तोनोव : इधर से !···आइये !·····

दायमनदीव : वहां ? (**चलते हैं, तख्ता पार करते हैं और दायमनदीव पलंग पर बैठता है**)

शुक्रिया। जहां तक मेरा सवाल है एन्तोनोव, मैं अपने ग्राहक को झांसे में नहीं रखता। मैं पन्द्रह फीसदी कमीशन लेता हूं, लेकिन ग्राहक जो चाहता है, मिलता है। मेरे जरिये तुम्हें वो मकान मिलेंगे जो कहीं नहीं मिल सकते।

[इस जगह एम० ए० पलंग के नीचे बने त्रिभुजाकार छेद में से सिर निकालकर सुनने लगता है। एन्तोनोव उसे देखता है और अपना माथा पकड़ लेता है। दायमन-दीव एन्तोनोव को देखकर एम० ए० की तरफ देखता है। मुंह बनाता है, दूसरे स्थान की ओर इशारा करता है—पलंग से निकलकर, फिर जीने के पास से होकर बाहर निकल जाते हैं जहां वो शान्ति से बात कर सकते हैं।]

दायमनदीव : (**जीने के नीचे आकर**) हर काम दिन-ब-दिन मुश्किल होते जा रहे हैं।

[दरवाजे की तरफ चलते हैं, लेकिन वहां लाइफगार्ड दिखाई देता है। वह रोमनबाथ में रस्से से बंधे गोले फेंकता दिखाई देता है। दोनों वापस चले जाते हैं और डैस्क के पास पड़ी दो कुर्सियों पर बैठ जाते हैं]

दायमनदीव : एन्तोनोव साहब !

ईवान एन्तोनोव : मैं सुन रहा हूं।

दायमनदीव : एक ग्राहक अभी है—वह ख़ास उल ख़ास चीज़ चाहता है। मोटी रकम देने को तैयार है। लेकिन चाहता भी मोटी सी चीज़ ही है।

ईवान एन्तोनोव : वह चाहता क्या है ?

दायमनदीव : तुम्हारा मकान ! उसने इस ताल के बारे में सुना है।

ईवान एन्तोनोव : मेरा मकान ? तुम्हारा मतलब है–यह मैदान-ए-जंग ?

दायमनदीव : जनाब।

ईवान एन्तोनोव : क्या वह खुदे हुए मकानों का दीवाना है ?

दायमनदीव : नहीं। वह हम दोनों को खरीद सकता है। वह मकान बनाने के सामान का काम करता है और उसके पास इतना पैसा है कि बताते हुए भी बड़ा अजीब सा लगता है।

ईवान एन्तोनोव : अगर अजीब लगता है, तो मत बताओ।

दायमनदीव : उसकी बीवी एक ऐसा मकान चाहती है जिसमें रोमन बाथ हो। उसने सुना है कि दुनिया में सिर्फ एक यह ही है।

ईवान एन्तोनोव : आहा ! लेकिन आपको मायूस होना पड़ेगा। यह मकान खरीदा नहीं जा सकता है। मेरा मतलब है इस हमाम के साथ।

दायमनदीव : दुनिया में कोई भी चीज़ ऐसी नहीं जो खरीदी नहीं जा सकती। सवाल सिर्फ इतना सा है कि—कितने की ?

ईवान एन्तोनोव : बात ऐसी है कि यह हमाम दुनिया में सिर्फ एक ही है। दुनिया की अहम तहज़ीबी याद-गार (**या दुनिया की महत्वपूर्ण सांस्कृतिक**

स्मृति) ! इन्स्टीट्यूट ने खुदाई शुरू कर दी है, अब वह टट्टी खोद रहे हैं।

दायमनदीव : उसकी कोई बात नहीं। इन्स्टीट्यूट पर मुकदमा कर देंगे। कानूनन ऐसा मुमकिन है— यह एक निजी मकान है। तीन वकीलों के साथ। वह तुम मुझ पर छोड़ दो।

ईवान एन्तोनोव : इसके अलावा एक लाइफ गार्ड है जिसे इन्स्टीट्यूट ने नौकर रखा है !

दायमनदीव : उस पर भी मुक़दमा कर देंगे तीन वकीलों के साथ।

ईवान एन्तोनोव : मेरा ख्याल है कि यह रोमन बाथ सरकार का है। और, जैसा कि एम० ए० कह रहा था, सारी दुनिया के इन्सानों का।

दायमनदीव : मैं सरकार पर मुकदमा कर दूंगा और जरूरत पड़ी तो सारी दुनिया के इन्सानों पर मुकदमा कर दूंगा !

ईवान एन्तोनोव : तीन वकीलों के साथ ?

दायमनदीव : तीन वकीलों के साथ। कोई मुकदमा ऐसा नहीं जो मैंने न जीता हो। तुम सिर्फ मुझे बेचने की इजाजत लिखकर दे दो, बाकी काम मेरा।

[बाहर से लाइफ गार्ड की सीटी और आवाज सुनाई देती है "सम्भल कर ! क्या तुम्हें भुनगे नहीं दिखाई देते हैं ?" कुछ ही देर के बाद वह अन्दर आता है, हाथ में तीन भुनगे हैं और एक चिट्ठी]

लाइफ गार्ड : एन्तोनोव, यह खत तुम्हारे लिए।

[ईवान एन्तोनोव पत्र पढ़ता है। लाइफ गार्ड भुनगों को हमाम के चारों तरफ और डोले पर रख देता है दायमनदीव चुपचाप एक किनारे खिसक जाता है]

ईवान एन्तोनोव : यह नामुमकिन है।

लाइफ गार्ड : यह बोरो काउंसिल से आया है।

ईवान एन्तोनोव : नहीं-नहीं—यह नामुमकिन है। मैंने एक घंटा बैठकर सारे हालात को उन्हें बारीकी से समझाया था। एक-एक लफ्ज़, धीरे-धीरे और साफ-साफ—कि मेरे घर में एक रोमन बाथ खोज निकाला गया है, यह कि मेरे पास कोई रहने की जगह नहीं है, और यह कि वह फौरन दखलअन्दाज़ी करके रोमन बाथ को मेरे घर से हटवा दें·····और जवाब में यह मुझे क्या लिखा है—

"कामरेड एन्तोनोव, तुम्हारे घर में रोमन बाथ खोलने के तुम्हारे अनुरोध के उत्तर में हम यह सूचित करते हैं कि आपका अनुरोध नागरिकों के निजी पहल पर अंकुश लगाने वाले अधिनियम के पैरा 3 नियम 57 के अन्तर्गत रद्द किया जाता है।

भ्रातृभाव सहित शुभकामनायें

"Comrade Antonov,

In answer to your request to open a Roman Bath in your house, we in-

---

मंचन के समय यदि पत्र को अंग्रेजी में ही पढ़ा जाय तो अधिक प्रभावशाली रहेगा।

form you that your request has been rejected in accordance with Paragraph 3, Clause 57 of the order for Restricting Private Initiative on the part of citizens. With fraternal greetings……"

दायमनदीव : दस्तख़त, सरकारी मोहर……

ईवान एन्तोनोव : दस्तख़त, सरकारी मोहर……

लाइफ गार्ड : आपको गुजारिश लिखकर करनी चाहिए थी।

ईवान एन्तोनोव : मैंने लिखकर भी गुजारिश की थी। यह कैसे मुमकिन है……

दायमनदीव : बोरो काउन्सिल में जाने की बजाय अपनी मदद खुद करो !

ईवान एन्तोनोव : नहीं—यह तो वाक़ई यकीन नहीं होता। मैंने उन्हें समझाने में एक घंटा लगाया था।

दायमनदीव : तुम्हें बहुत पैसा मिलेगा। सब इकट्ठा। कोरी "फ्रेटरनल ग्रीटिंग्ज़" ही नहीं।

सेकोव : (**छेद में से बाहर झांकते हुए**) एन्तोनोव स्विस फ्रैन्क के भाव को कम मत समझना।

(फिर अंदर घुस जाता है)

लाइफ गार्ड : (**उछलकर**) उदबिलाऊ-सा लगता है।

ईवान एन्तोनोव : (**खोया-खोया-सा**) कौन उदबिलाऊ ? कहां ?

लाइफ गार्ड : वहाँ। वह कुछ बोला था।

ईवान एन्तोनोव : बन्द करो यह बेहूदगी। बहुत हो चुकी। ऊदबिलाऊ बात नहीं करते हैं। मैं, लगता है, आधा पागल……

दायमनदीव : तुम मुझे पावर आफ एटार्नी अभी दोगे या कल आऊं ?

ईवान एन्तोनोव : कल-कल। हां—तुम किस पावर आफ एटार्नी की बात कर रहे हो ?

दायमनदीव : जिससे तुम्हारा मकान बेचने का हक़ मुझे मिल जाये।

सेकोव : (**दूसरे छेद से मुंह बाहर निकालकर**) एन्तोनोव लेक कोमो मत भूलना····· (**छिप जाता है।**)

दायमनदीव : मैं इस आवाज को पहचानता हूं।

ईवान एन्तोनोव : तुम पहचानते हो ?

लाइफ गार्ड : वह ऊदबिलाऊ है (**जोश में चिल्लाता है**) असली ऊदबिलाऊ।

दायमनदीव : नहीं। मैं यह आवाज जानता हूं। एन्तोनोव, कब ?

ईवान एन्तोनोव : क्या कब ? अरे हां। अभी नहीं, अभी नहीं, मैं अभी इस बारे में सोच नहीं सकता। देखो न, कितना गन्द फैला हुआ है अभी।

दायमनदीव : हिचकिचाओ मत। दाम हर रोज तेजी से घट रहे हैं और सरकारी मुआवजे तय किये जा रहे हैं। और इन सबसे बुरी बात यह है कि हालात बदल रहे हैं।

ईवान एन्तोनोव : हां, हां, बदल रहे हैं।

[एम०ए० दरवाज़े से अन्दर आता है, हाथ में कुदाली लिये है। दायमनदीव की तरफ शक की निगाहों से देखता है। दायमनदीव

सुध-बुध खो बैठता है और भागने की जल्दी करता है]

दायमनदीव : अच्छा, ठीक है, मैं फिर आऊंगा। कल। **(ये आखिरी शब्द वह कान में फुसफुसाता है और बाहर चला जाता है)**

एम० ए० : एन्तोनोव, मुझे लगता है कि तुम्हारे पास शकबाज लोग आने लगे हैं।

ईवान एन्तोनोव : **(एम० ए० की तरफ इशारा करते हुए)** कुदाली लिये।

एम० ए० : मैं तुम्हें आगाह कर देना चाहता हूं कि अगर तुमने मेरे रोमन बाथ को छुआ तो यह मत समझना कि तुम बिना सजा पाये बच निकलोगे। ऐसी गलती तुम्हें बहुत भारी पड़ेगी। सरकार कई फिलिस्तीनियों से, जो कि सिर्फ अपने बारे में सोचते हैं, निपट चुकी है और वह तुमसे भी निपट लेगी।

ईवान एन्तोनोव : और तुम किसके फायदे के बारे में सोचते हो ? साइन्स ने तुम्हें दबोच रखा है, है ना ? एक ऐसी ज़िन्दगी जिसे तुमने इन्सान की खिदमत में लगा रक्खी है ! कोई मक्कारी नहीं, कोई फायदा नहीं—तुम बेगर्ज़ हो !

एम० ए० : आज का आदमी ही काम करता है एन्तोनोव !

ईवान एन्तोनोव : चाहे वह काम कैसा ही हो ?

एम० ए० : मंजिल तक पहुंचने के लिए सारे रास्ते पाक होते हैं। कोई-न-कोई उन्हें पाक जरूर करार देगा। मंजिल तक पहुंचना चाहिए, सब। मैं

तुम जैसों को जानता हूं—तुम वहां बैठते हो ताकि लोग तुम्हें वहां बैठा देखें, तुम्हारी रूह को देखें और उसमें छिपी दौलत को पहचानें। उस अनगिनत खजाने को और उसके बेश-कीमती गुणों को पहचानें। तुम्हारे मोहब्बत से भरे हुए दिल को पहचानें। तुम वहां बैठते हो, इन्तज़ार करते हो·····और तुम्हें अचम्भा होता है कि कोई तुम्हारी तरफ निगाह उठा कर नहीं देखती क्योंकि औरतें तुम्हारी बनिस्बत दूसरों को ज्यादा पसन्द करती हैं।

ईवान एन्तोनोव : क्यों नहीं देखती निगाह उठाकर? कम-से-कम मैं तो ऐसा नहीं कहूंगा।

एम० ए० : एन्तोनोव, थोड़ी मशक्कत किया करो।

ईवान एन्तोनोव : मशक्कत तुम्हारे लिए! तुम्हारे लिए तो सिर्फ पेट्रोल की जरूरत है ताकि कुचल कर आगे बढ़ सको।

एम० ए० : अपने बारे में बड़े ऊंचे ख्यालात रखते हो, एन्तोनोव।

ईवान एन्तोनोव : अपने बारे में नहीं—आदमी के बारे में। मैं आदमी को इस हमाम से ज्यादा ऊंचा मानता हूं।

एम० ए० : तो ठीक है, तुम बने रहो ऊंचे आदमी। मैं टट्टी खोदने जा रहा हूं (**चलने लगता है**) तुम टट्टी को कहां रखते हो ऊपर या नीचे?

ईवान एन्तोनोव : उस आदमी पर मुनस्सर है जो खोदने जा रहा है। इस हालत में—ऊपर। और खुदाई

के दौरान कदमचे का ध्यान जरूर रखना नहीं तो मैं तुम पर मुकदमा कर दूंगा। तीन वकीलों के साथ। आज का आदमी ऐसा ही करता है। है कि नहीं—जब कोई टट्टी का कदमचा तोड़ता है।

[थका-सा पलंग पर लेट जाता है जो कि डोले पर बिछा है, जमीन से दो मीटर ऊपर। लाइफ गार्ड अपने मचान पर बैठा है और इन्हें घूर-घूर कर देख रहा है।]

न जाने क्यों इस मौसम में मैं समुद्र के किनारे सैर के लिए गया ? वो मुझे जनवरी के महीने में जाने का पास देते थे, कितना अच्छा था—ठंड होती थी और कोई आदमी वहां नहीं होता था। और सबसे जरूरी बात यह कि कभी कुछ नहीं हुआ। ज्यादा-से-ज्यादा हल्की-सी खांसी, जुख़ाम या निमोनिया हो जाता था। बस एक बार अगस्त के महीने में वहां गया तो यह सब क्या हो गया···

[लाइफ गार्ड मीनार पर लाल झंडा फहराता है, काली प्लेट पर बारह डिग्री लिखता है और फिर शान्ति से बैठ जाता है।]

लाइफ गार्ड : (**उछल कर**) कामरेड एन्तोनोव, क्या मैं तुम्हें बचा दूं ?

ईवान एन्तोनोव : क्या तुम मुझे बचाते-बचाते थके नहीं हो ? बदलाव के तौर पर आज एम० ए० को बचाओ ?

लाइफ गार्ड : (**जोश के साथ**) वह नहीं मानेगा। तुम जानते हो वह पढ़ा-लिखा आदमी···

ईवान एन्तोनोव : मैं भी पढ़ा-लिखा हूं।

लाइफ गार्ड : नहीं। तुम दूसरे किस्म के आदमी हो। तुम आदमियों को पसन्द करते हो! एन्तोनोव, तुम जानते हो कि मुझे किसी को बचाना है, यह मेरा पेशा है। नहीं तो हमारा क्या होगा? एक ताल है, एक लाइफ गार्ड है और फिर भी किसी को बचाया नहीं गया। मुझे काम तो करना ही है नहीं तो मैं निकाल बाहर किया जाऊंगा।

ईवान एन्तोनोव : मैं अभी अपने आपको बचवाना नहीं चाहता।

लाइफ गार्ड : क्यों नहीं? यह वक्त अच्छा है—मीनार पर लाल झंडा फहरा रहा है।

ईवान एन्तोनोव : (झुंझलाकर) नहीं, इस वक्त नहीं।

लाइफ गार्ड : और पानी भी बर्फीला है—जिस्म अकड़ने का बिलकुल सही वक्त!

ईवान एन्तोनोव : मुझे ठंडे पानी में डूबना पसन्द नहीं—इससे सर्दी लग जाती है।

लाइफ गार्ड : कामरेड एन्तोनोव, तुम एक अच्छे आदमी हो। तुम हमेशा मुझे सही समझते हो। आओ, मुझे बचाने दो, ठीक? पांच मिनट के लिए। एन्तोनोव! आओ, मैं तुमसे इल्तजा करता हूं।

ईवान एन्तोनोव : (**सांस भर कर**) ठीक है, चलो, बचाओ मुझे! अबकी बार मुझे कहां डूबना है?

लाइफ गार्ड : वहां पर, उस जाल के पीछे। (**अपनी रस्सी जल्दी से वहीं फेंक देता है**)

ईवान एन्तोनोव : लेकिन अबकी बार मुझे बनावटी सांस मत

देना। पिछली बार तुमने मेरी बांहें तोड़ दी थीं।

लाइफ गार्ड : हां।

ईवान एन्तोनोव : मैं कूदूं ?

लाइफ गार्ड : हां—कूदो ?

ईवान एन्तोनोव : एं—ये गया। **(ताल में जाता है और फर्श पर बैठ जाता है)**

लाइफ गार्ड : बांहें बेशक टूट जाये, लेकिन जिन्दा तो रहेंगे। यह मेरा ख्याल ठीक है ना, एन्तोनोव ?

ईवान एन्तोनोव : क्या बिना इस तमाशे के तुम्हारा काम नहीं चल सकता ?

लाइफ गार्ड : ये मेरा काम है, मुझे करना है, वरना मैं भूल जाऊंगा। और या बिना कुछ काम के बैठा-बैठा अकड़ जाऊंगा ?

ईवान एन्तोनोव : अब मैं चिल्लाऊं ?

लाइफ गार्ड : हां !

ईवान एन्तोनोव : **(गिड़गिड़ाने के स्वर में)**बचाओ—ब···चा··· ओ···ओ···

[लाइफ गार्ड मचान पर बैठा है, दूरबीन उठाता है और उसमें से देखता है, लेकिन उस स्थान पर नहीं देखता जहां एन्तोनोव बैठा है]

बचा—चा—चा—ओ।

[एम० ए० रसोई में से कुदाली हाथ में लिये बाहर आता है]

एम० ए० : यह सब क्या है ?

ईवान एन्तोनोव : **(जल्दी से मामला समझाते हुए)** मैं डूब रहा हूं—बचा···ओ ।

एम० ए० : जाहिल—बेवकूफ **(जाता है)**

लाइफ गार्ड : मैंने तुम्हें देख लिया है। मैं आ रहा हूं ! रुके रहो ! मैं तैरकर आ रहा हूं !···आ रहा हूं !

[मचान से कूदता है, बैल्ट उठाता है, इसे ईवान एन्तोनोव की तरफ फेंकता है। फिर ताल की तरफ झुककर तैराकियों की-सी नकल करता है। ये सब ताल के सामने वाले फट्टे पर लेट कर करता है। फिर वह एन्तोनोव को पकड़ लेता है और ताल के जीनों के ऊपर से बाहर घसीटता है]

ईवान एन्तोनोव : बस छोड़ दो, नहीं तो तुम मेरी कमर तोड़ दोगे ।

लाइफ गार्ड : एक-एक पल भारी होता है। मैं तुम्हारी जिन्दगी के लिए लड़ रहा हूं ।**(वह पूरी ताकत से उसे बनावटी सांस देता है, एन्तोनोव नीचे पड़ा चीख रहा है)**

ईवान एन्तोनोव : बस···काफी हो चुका···ओह, रुको, बस करोगे कि नहीं ? बहुत हो चुका, सुन रहे हो ?

लाइफ गार्ड : अब ठीक है। **(उसे उठा कर खड़ा करता है। ईवान हांफ रहा है और लड़खड़ा रहा है)** एक मिनट की देरी अगर और हुई होती तो तुम डूब जाते।

ईवान एन्तोनोव : पानी बहुत ठंडा था—मैं अकड़ गया।

[लाइफ गार्ड कांपता हुआ इधर-उधर भागता है, अपने आपको तैराकी पोशाक से लपेट लेता है और दूसरी पोशाक एन्तोनोव के ऊपर रखता है। ईवान उसे हटा देता है]

लाईफ गार्ड : **(दराज़ के पास जाता है और खास रजिस्टर निकालता है)** दस्तखत करो—यहां—ठीक है—शुक्रिया।

ईवान एन्तोनोव : **(दस्तखत करते हुए)** हमें हर बार ऐसा क्यों करना पड़ता है ?

लाइफ गार्ड : क़ायदे, एन्तोनोव, क़ानून। अगर क़ायदे और तैराकियों को बचाने के तौर-तरीके न हों तो··· **(दरवाजे पर एक आदमी दिखाई देता है)** देखो—दरवाजे पर कोई आया है।

[जब ये बनावटी सांस देने का नाटक कर रहे थे तभी एक आदमी चुपचाप खड़ा हो गया था और अभी चुपचाप खड़ा है]

ईवान एन्तोनोव : कहीं यह आदमी तो ऊदबिलाऊ लेकर नहीं आया ?

लाइफ गार्ड : चुप रहो—यह बी० आई० पी० है।

ईवान एन्तोनोव : जरा रुको ! शायद यह बोरो काउन्सिल का आदमी है जहां मैं अपनी अर्जी देकर आया था। उन्होंने कहा था कि वह जांच के लिए आदमी भेजेंगे। और हम यहां यह बचने का तमाशा कर रहे हैं। आइये, जनाब आइए। आखिर-कार अन्दर आइये। आपसे मिलकर बेहद खुशी हुई। मैं ईवान एन्तोनोव हूं। देखा

आपने क्या हालत बना रक्खा है—सूराख, गड्ढे, ताल एक लफ्ज में हंगामा। मैं छुट्टी बिताने गया था और जब घर वापस लौटा—एक रोमन बाथ मेरे रहने वाले कमरे में निकल आया। शहंशाह पाम्पीलियंस के जमाने का—अप्सराओं के साथ। देखिये, वो हैं अप्सरायें—वहां। (दिखाता है) मैं यहां मजदूरों को फर्श ठीक करने के लिए छोड़ गया था. उन्होंने थोड़ा-सा खोदा, यह रोमन बाथ निकल आया। दुनिया में सिर्फ एक, कला का अजीबोगरीब नमूना! इस पर भाषण लिखे जा रहे हैं, यूनेस्को इसे अपनी निगरानी में रखने जा रहा है, हमारे पास एक लाइफ गार्ड भी है (**लाइफ गार्ड की तरफ इशारा करता है, लाइफ गार्ड** खंखारता है) ये सब तो बहुत अच्छा है, लेकिन मेरे पास रहने के लिए जगह नहीं है। यह है इसका नतीजा। मेरा घर एम० ए०, लाइफ गार्ड और भुनगों से भरा पड़ा है और वो तैराकी की ट्रेनिंग भी यहां देंगे···मेरी टट्टी खोदी जा रही है, उनकी निगाह मेरी रसोई पर भी है, इन्होंने मेरा फर्नीचर तोड़ डाला और यह सब ये कर रहे हैं, साइन्स के नाम पर। साइन्स कुर्बानी चाहती है—ईवान एन्तोनोव वो कुर्बानी दे रहा है। वो ओलम्पिक में दस गोल्ड मैडल जीतना चाहते हैं, ईवान एन्तोनोव के नुकसान पर।

[आदमी ईवान एन्तोनोव की बात बहुत सावधानी से सुन रहा है, हर शब्द को बड़े गौर से, अपनी नोटबुक निकालता है और कुछ लिखता है]

ईवान एन्तोनोव : यह ठीक है कि रोमन बाथ पर मेरा कोई हक़ नहीं है तो क्या मुझे रहने का भी हक़ नहीं है ? एक जमीन का छोटा-सा टुकड़ा, या कुछ कहने का मुझे कोई हक़ नहीं ।

[आदमी ईवान एन्तोनोव की बात सुनकर सहमति में सिर हिलाता है]

ईवान एन्तोनोव : इन सब बातों का क्या अन्त होगा, आप अन्दाजा लगा सकते हैं ? इस वक्त वह टट्टी खोद रहे हैं। अगर उन्हें खोदते हुए कुछ मिल गया, मेरा घर एक म्यूजियम बन जायेगा। वह हर चीज पर लाल फीता बांध देंगे और विदेशी भाषाओं में नोटिस लिखकर टांग देंगे।···मैं कहां जाऊंगा ? विदेशी मुझे देखना भी पसन्द नहीं करेंगे। मैं उनके किसी मतलब का नहीं।

लाइफ गार्ड : यह तो है, वह किसी भी पुरानी चीज को देखना पसन्द नहीं करते।

ईवान एन्तोनोव : ठीक। मैं सब तरफ से पिस रहा हूं। एक खोदता है, दूसरा जान बचाता है, तीसरा लेक कोमो की बात करता है···जो खोदते हैं वह मकान नहीं देते, वो सिर्फ खोदते हैं। जो मकान देते हैं, खोदने वालों से उनका कोई वास्ता नहीं होता। और सब मिलकर ऐलान करते हैं कि

उनसे मेरा कोई वास्ता नहीं। शिकायत के दफ्तर से आये मेरे दोस्त, जमीन की यह हालत है। और अगर तुमने भी कुछ नहीं किया तो मैं लेक कोमो के किनारे जाकर बस जाऊंगा, मैं इस जंजाल से बहुत तंग आ चुका हूं। बहरहाल मैं स्लावेकोव स्क्वायर में जाकर पेडों के नीचे तो नहीं रह सकता, यह तो आप मानेंगे ? मैंने गुजारिशें भेजीं, मैं लोगों से मिलने गया, मैंने समझाया, लेकिन मेरे मामले में कुछ भी नहीं हो रहा है। मेहरबानी करके आप कुछ कदम उठायें।

[ईवान एन्तोनोव बोलना बन्द करता है और आदमी की तरफ देखता है, जो कि जवाब में ईवान एन्तोनोव की तरफ देखता है यह यकीन करने के लिए कि वह बोलना बन्द कर चुका है। यह देख कर कि वह कुछ भी नहीं बोल रहा है, आदमी एक नोटबुक निकालता है और उस पर कुछ लिखता है। वह ईवान एन्तोनोव को देता है। ईवान एन्तोनोव लेता है और पढ़ता है। वह भौंचक्का-सा आदमी की ओर देखता रह जाता है। फिर एन्तोनोव लाइफ गार्ड की तरफ देखता है बहुत आश्चर्य चकित होकर]

लाइफ गार्ड : यह क्या है कामरेड एन्तोनोव, क्या वह तुमको नया मकान दे रहे हैं।

ईवान एन्तोनोव : (आदमी की तरफ दोबारा देखता है और ज़ोर

से पढ़ता है) "मैं जन्म से गूंगा-बहरा हूं। अगर आप चाहें तो मुझे दो लीवा की मदद करें। धन्यवाद !"

लाइफ गार्ड : **(आदमी की तरफ आश्चर्यचकित निगाहों से देखता रह जाता है)** क्या···?

ईवान एन्तोनोव : **(गूंगे से)** ऐ ! तुमने मुझे फौरन ही क्यों नहीं बताया ?

लाइफ गार्ड : कैसे बताता ? वह गूंगा-बहरा है, है ना ?

ईवान एन्तोनोव : इतना भुकवाने की बजाय यह परचा मुझे पहले ही क्यों नहीं दे दिया ?

लाइफ गार्ड : हूं—इसने देखा कि आपने कुछ बात करना शुरू कर दी है तो यही तय किया कि आप बात खतम कर लें ताकि आप बुरा न मानें। वह अपने दो लीवा का इन्तजार कर रहा था, है ना ?

ईवान एन्तोनोव : तुम ठीक कहते हो शायद। लेकिन मेरे पास नोट नहीं हैं, कुछ फुटकर रेज़गारी है। **(गूंगे-बहरे से)** माफ करना, रेजगारी से काम चल जायेगा ? **(रेजगारी दिखाता है)**

[गूंगा एक कागज का टुकड़ा लिखकर देता है]

लाइफ गार्ड : क्या कहता है ?

ईवान एन्तोनोव : **(पढ़ते हुए)** चल जायेगा।

(पर्दा)

तीसरा अंक

[ईवान एन्तोनोव का कमरा उसी अवस्था में, सिवाए इसके कि लाइफ गार्ड की मीनार कुछ ऊंची हो गई है और पलंग की जगह पर रख दी गई है, जहां पर हमाम के बगल में नलकियों वाला डोला बना है पलंग मीनार के नीचे बिछा हुआ है। लाइफ गार्ड मीनार पर छतरी के नीचे बैठा है और सीटियां बजा रहा है]

लाइफ गार्ड : वापस आओ! वापस आओ!! वहां नहीं जाओ तुम हद से बाहर जा रहे हो !!! वह खतरनाक इलाका है···(**किसी अजनबी व्यक्ति को जो पहले कभी नहीं आया, दरवाजे पर खड़ा देखता है**)

[गेचेव, जो स्थानीय संस्था का कार्यकर्ता है, अन्दर आता है, लाइफ गार्ड के हुक्म के मुताबिक, और खोया-खोया सा]

लाइफ गार्ड : तुम कहां जा रहे हो ? यह सबसे गन्दी जगह है खतरनाक इलाका है, वहां जमीन में नीचे चट्टानें हैं···बाएं मुड़ो···मेरी तरफ देखो, मेरी तरफ। मैं यहां किसलिए रक्खा गया हूं ? मेरी तरफ देखो ! आगे आओ, रुको।(**कार्यकर्ता ठीक एक छेद के सामने है**) देखो ! आंखें मेरी तरफ रक्खो, मेरी तरफ, चलते रहो और

और···वहां से कूद जाओ। तुम चट्टान पर हो, चट्टान पर, ठीक है···अब दो कदम दाएं, दो और, आंखें मेरी तरफ रक्खो !···

[लाइफ गार्ड के हुक्म को मानते हुए गेचेव फर्श पर एक छेद में जा गिरता है और गायब हो जाता है। लाइफ गार्ड इसी मौक़े का इन्तज़ार कर रहा था, वह अपनी रस्सी फेंकता है, तैराकी पोशाक़ पहनता है, नक़ाब चेहरे पर पहनता है और छेद की तरफ जाता है।]

लाइफ गार्ड : वो है ! मैंने तुमसे कहा था ना ! ···अब ठहरो! मैं आ रहा हूं ! मैं अभी तुम्हारी तरफ तैरता हूं (**छेद की तरफ यह भी कूदता है**)।

[इसी समय गेचेव दूसरे छेद से बाहर मुंह निकाल कर झांकता है और आश्चर्यचकित होकर लाइफ गार्ड की चीख-पुकार सुनता है।]

लाइफ गार्ड : मैं आ रहा हूं। मैं तुम्हें देख रहा हूं।

गेचेव : तुमने मुझे कहां देखा ?

[लाइफ गार्ड छेद में से बाहर देखता है, लम्बी सांस लेता है और फिर गोता-सा लगाता है। गेचेव जिस छेद में गिरा था वहां जाता है। और छेद में झुककर देखता है। लाइफ गार्ड फिर उसमें से सिर बाहर निकालता है, तब दोनों के सिर आपस में जोर से टकराते हैं।]

गेचेव : ओह, मेरा माथा भन्ना रहा है।(**सिर हाथों से**

पकड़ लेता है)

लाइफ गार्ड : वह तो भन्नायेगा ही। क्योंकि तुम मेरा कहना नहीं मानते। **(गेचेव को पकड़ कर जमीन पर गिरा देता है और खुद उस पर चढ़ बैठता है और बनावटी सांस देना शुरू कर देता है)**

गेचेव : ओह···ओह···लेकिन तुम···मेरा हाथ···ओह बचाओ, ओह···

लाइफ गार्ड : तुम्हें नहीं बोलना है।

गेचेव : ओह···मेरी कमर···क्यों ?

लाइफ गार्ड : पहले तुम चुप हो जाओ। इस तरह के हादसे के बाद लोगों को धक्का लगता है। **(बड़ी फुर्ती से, कानून के मुताबिक, बनावटी सांस देता रहता है)**

गेचेव : रहम···

लाइफ गार्ड : **(उसे फर्श पर छोड़ देता है अधमरा और टूटा-टूटा सा।)** तुम बच गए **(मचान की तरफ भागता है, कान से पानी निकालने का अभिनय करता है, और अपने शरीर को तौलिया से ढक लेता है)**

गेचेव : **(धीरे-धीरे अपना होश सम्भालते हुए, और आसपास की चीजों से दुखी होते हुए)** क्या यही रोमन बाथ है ?

लाइफ गार्ड : जनाब।

गेचेव : दुनिया में एक यही अकेला है, है ना ?

लाइफ गार्ड : वो ऐसा ही कहते हैं।

गेचेव : हमारी जमायत **(संगठन)** के मैम्बर **(सदस्य)** हो ?

लाइफ गार्ड : कैसी जमायत (**संगठन**) ?

गेचेव : हमारी लोकल जमायत (**स्थायी संगठन**)। मैं वहां हर फन का माहिर हूं, लेकिन मैंने तुम्हें नहीं देखा !

लाइफ गार्ड : मैं एक लाइफ गार्ड हूं। इस ताल से वास्ता रखता हूं।

गेचेव : ये बात है ! तुम्हारा काम क्या है ?

लाइफ गार्ड : लोगों को बचाता हूं। इसके अलावा, हम यहां हजारों नये तैराक तैयार करेंगे, यही वक्त की आवाज़ है। हमारे ऊंचे काम के ऊंचे नतीजों की वजह है ये आम खेलकूद—यह मास—स्पोर्ट्स (**एक रजिस्टर निकालता है**) अब यहां दस्तख़त करो।

गेचेव : यह क्या है ?

लाइफ गार्ड : एक दस्तावेज जो इस बात का सुबूत है कि मैंने तुम्हारी जान बचाई।

गेचेव : क्या इसके कुछ पैसे देने पड़ते हैं ?

लाइफ गार्ड : नहीं। हमारे देश में जान मुफ्त बचाई जाती है।

गेचेव : फिर मैं दस्तखत करूंगा।(**दस्तखत करता है**) तो यह तरनताल है, यहां के लोगों के लिए। (**ताल में घुसता है और श्रद्धा से देखता हैं**) बहुत सुन्दर ! और, हाँ आपका कहना है कि दुनिया में यह एक ही है ?

लाइफ गार्ड : ऐसा दूसरा कहीं नहीं।

गेचेव : तो दूसरी जगहों की जमायतों में ऐसे हमाम नहीं मिलेंगे ?

लाइफ गार्ड : हो ही नहीं सकते।

गेचेव : तुम्हें पूरा यकीन है ?

लाइफ गार्ड : एम० ए० ऐसा ही कहता है।

गेचेव : तो हमारी शोहरत पक्की है। अब हम जरूर हासिल कर लेंगे। हमने दुनिया का अकेला रोमन बाथ ढूंढ़ निकाला है। दूसरी लोकल जमायतें हमारा क्या मुकाबला करेंगी ?

लाइफ गार्ड : कोई नहीं।

गेचेव : कोई भी नहीं। ना तो तैतालिस नम्बर, ना ही सौ नम्बर और ना ही सात नम्बर··· (**बांदियों को ताल में देखकर**) लेकिन ये नंगी ···यहां···ये कुछ···

लाइफ गार्ड : वह एक काल था, एक युग या जब वह नंगी नहाया करती थीं। वह एक जमाना था।

गेचेव : हां-हां—बड़ा जमाना। मैं कमेटी को यही बताऊंगा—वह जमाना दूसरा था—यह जमाने की ग़लती थी। जहां तक तैराकियों का सवाल है हमारी लोकल जमायत हजारों नये तैराकियों को यहां तैरना सिखायेगी, उन्हें ट्रेनिंग देगी। यही आज के वक्त की आवाज़ है।

लाइफ गार्ड : क्यों ? तुम्हारी जमायत उन्हें कैसे ट्रेनिंग देगी ?

गेचेव : भई, अभी तुमने कहा तो था कि हजारों नये तैराक़ यहां ट्रेनिंग लेंगे। भई कौन उन्हें ट्रेनिंग देगा सवाल इस बात का नहीं है, सवाल इस बात का है कि हमें तग़में जीतने हैं—

शोहरत हासिल करनी है। कमेटी को यह बता देना है कि हम आवाज पर पीछे हटने वाले नहीं हैं, बल्कि हम उस पर अमल करना जानते हैं। जनाब! हजारों नये तैराक़ इस पौम्प ···पौम्प···जिसके जमाने का यह ताल था ? क्या नाम था उसका ?

लाइफ गार्ड : पौम्पीलियनस। पौम्प तो तुम्हें याद है, पी··· ली···यनस और जोड़ दो।

गेचेव : 'पौम्प' ही रहने देते हैं। यही मैं कमेटी को बता-ऊंगा। अब हम शोहरत हासिल किये बिना नहीं रह सकते। और जनाब लाइफ गार्ड साहब— पता है हमें इनाम मिलेगा ? और पता है इनाम क्या होगा ?

लाइफ गार्ड : मुझे क्या मालूम।

गेचेव : जनतांत्रिक जर्मन गणराज्य (**जर्मन डैमोक्रेटिक रिपब्लिक**) की सैर।

लाइफ गार्ड : बुरा तो नहीं है।

गेचेव : मिक्सर्स वहां पर दुगुने सस्ते हैं।

लाइफ गार्ड : हां—लेकिन कस्टम से कैसे बचाओगे ?

गेचेव : कार्यकर्ता कभी ड्यूटी नहीं देते। वह लोगों की सेवा करते हैं। मेरा तो यही ख्याल है।

लाइफ गार्ड : जब जर्मन कस्टम के लोगों के हत्थे चढ़ोगे फिर पूछूंगा तुम्हारा ख्याल·····

गेचेव : यह ठीक नहीं है। तुम्हें हम में पूरा यकीन होना चाहिए। जमायत·····

[अचानक निगाहें एन्तोनोव और मार्था पर पड़ती हैं जो इसी समय कमरे में दाखिल

होते हैं। गेचेव मार्था को रसभरी आंखों से देखता ही रहता है और आगे क्या कहना चाहता है, भूल जाता है। लाइफ गार्ड मीनार पर चढ़ जाता है]

मार्था : हेलो।

गेचेव : (**घूरकर, लार सटकता हुआ**) हेलो ! हेलो !!

ईवान एन्तोनोव : (**व्यंग्य से**) माफ करना, जगह जरा ऊबड़-खाबड़ है।

मार्था : यह ऊबड़-खाबड़ नहीं है, जरा जोत दी गई है। जरा खुदी हुई है।

ईवान एन्तोनोव : एम० ए० के नजरिये से ?

मार्था : (**समझौते के स्वर में**) उसका तो फैसला हो चुका है—है ना ?

ईवान एन्तोनोव : मुझे माफ करना। (**लाइफ गार्ड से**) ये आदमी कौन है ?

लाइफ गार्ड : मैंने अभी इसे बचाया है। यहीं एक लोकल जमायत का कार्यकर्ता है।

ईवान एन्तोनोव : (**गेचेव से**) आपसे मिलकर खुशी हुई।

गेचेव : और यह हसीन कमसिन ? क्या ये हमारी लोकल जमायत की मैम्बर हैं ?

ईवान एन्तोनोव : नहीं। यह दूसरे संगठन की मैम्बर है।

गेचेव : अफसोस ! इनके साथ तो कोई भी काम करने के लिए तैयार हो जाएगा, इसका अन्दाज तुम लगा सकते हो। (**इन शब्दों के साथ मार्था की तरफ ललचाई निगाहों से देखता है**) अच्छा, अब मैं चलूं—आप लोग मसरूफ हैं। (**मार्था की तरफ देखता है, रुकता है, ताल**

की तरफ देखता है, फिर मार्था की तरफ फिर एन्तोनोव की तरफ देखता है) नमस्ते ।

ईवान एन्तोनोव : नमस्ते (**लाइफ गार्ड से जो मचान पर चढ़ा बैठा है**) तुम्हारा दोस्त है ?

लाइफ गार्ड : मैंने तो सिर्फ उसे डूबने से बचाया था। वह किसी शोहरत की बात कर रहा था।

ईवान एन्तोनोव : शुक्र है। और वह कुछ मांग तो नहीं रहा था ?

लाइफ गार्ड : नहीं ।

ईवान एन्तोनोव : अजीब बात है। मुझे वाक़ई शक होता है— यहां पर वह आए, और मांगे कुछ नहीं !

मार्था : (**धीरे से**) वह मचान पर बैठा आदमी कौन **है ?**

ईवान एन्तोनोव : यह लाइफ गार्ड है। ताल के लिए भर्ती किया गया है, इन्स्टीट्यूट ने भर्ती किया है।

मार्था : किसको बचाता है ?

ईवान एन्तोनोव : मुझे। मुझे कम-से-कम पचास बार बचाया है।

मार्था : वाक़ई ?

ईवान एन्तोनोव : भर्ती का हुकमनामा इसके पास है। इसे कोई दूसरा शिकार ही नहीं मिलता।

मार्था : हे भगवान —एक लाइफ गार्ड ?

ईवान एन्तोनोव : लड़का बुरा नहीं है।

मार्था : मैं किताब ढूंढ़ने जा रही हूं।

[फर्नीचर के बीच में से होती हुई बिखरी किताबों की तरफ जाती है]

लाइफ गार्ड : (**मचान से नीचे उतरकर**) कामरेड एन्तोनोव।

ईवान एन्तोनोव : अभी एक मिनट में आया। बुक-केस की चाबी ढूंढ़ लूं। (**वार्डरोब की तरफ बढ़ता है**)

लाइफ गार्ड : कामरेड एन्तोनोव, जरा सुनिये।

ईवान एन्तोनोव : क्या है ?

लाइफ गार्ड : तुम मुझे सोने की घड़ी दो। अगर जेब की है तो वो भी चलेगी।

ईवान एन्तोनोव : (**बात को मजाक समझकर**) क्यों ? तुम्हारा जन्मदिन है !

लाइफ गार्ड : (**संजीदगी और दृढ़ता के साथ**) तुम्हें देनी पड़ेगी, मैंने तुम्हारी जिन्दगी बचाई है।

ईवान एन्तोनोव : मजाक कर रहे हो ! कब ?

लाइफ गार्ड : कई बार। यही मैंने अपने अफसरों को बताया कि आप इतने नेक दिल हैं कि आपने मुझे अपनी घड़ी दे दी। अब वह उसे देखना चाहते हैं।

ईवान एन्तोनोव : देखो, मजाक काफी हो चुकी, अब मुझे काम करने दो।

मार्था : (**फर्नीचर में से आवाज लगाती हुई**) यह क्या हंगामा है, एक चीज भी नहीं मिलती।

ईवान एन्तोनोव : वहीं है, मैं आ रहा हूं···(**चलने लगता है**)

लाइफ गार्ड : (**बाहें पकड़कर**) तुमने दस्तावेज पर दस्तखत किये हैं। (**रजिस्टर हिलाकर दिखाता है**)

ईवान एन्तोनोव : (**लड़खड़ाता हुआ**) लेकिन वह मैंने तुम्हारे खातिर किये थे, तुम्हारी खुशी के लिए किये थे ना ?

लाइफ गार्ड : बड़ी अच्छी खुशी थी, एक तो डूबतों को बचाओ और·····

ईवान एन्तोनोव : मैं तुम्हारे अफसरों से मिलूंगा·····

लाइफ गार्ड : ये तुम्हारे दस्तखत हैं ना ? (**रजिस्टर दिखाता है**) हैं। यह सरकारी कागजों पर हैं ना ? हां हैं। सरकारी दस्तावेजों पर जाली दस्तखत करने का अन्जाम जानते हो ? जेल। तुम सरकार को अपने इन दस्तखतों से भुलावे में डालते रहे, और एक बार नहीं, कई बार।

ईवान एन्तोनोव : लेकिन वह तो खेल था।

लाइफ गार्ड : एक अच्छा खेल जो तुम्हें सींखचों में बन्द करा सकता है।

ईवान एन्तोनोव : लेकिन मेरे पास सोने की घड़ी नहीं है।

लाइफ गार्ड : हां है, तुम्हारी जेब में।

ईवान एन्तोनोव : लेकिन वह मेरे पिताजी की है।

लाइफ गार्ड : तो ठीक है, फिर तुम जेल जाओ।

ईवान एन्तोनोव : मैं सोचता हूं मैं वहीं ठीक रहूंगा—मेरे पास कहीं रहने की जगह भी तो नहीं है।

लाइफ गार्ड : फिर 'वो' क्या कहेगी ?

ईवान एन्तोनोव : 'वो' ?

लाइफ गार्ड : (**मार्था की ओर इशारा करके**) एम० ए० की मंगेतर। जब तुम जेल में होगे तो एम० ए० उसे फिर घसीट ले जायेगा—वह अपने तलवे के नीचे जरा सी भी घास नहीं उगने देता।

ईवान एन्तोनोव : हां—यह तो ठीक है।

लाइफ गार्ड : औरतें इज्जत पर ज्यादा ध्यान देती हैं। और तम उसका बड़ा ध्यान रखते हो—मार्था का।

[लाइफ गार्ड अपना हाथ फैलाता है। ईवान एन्तोनोव वहां खड़ा है, गहरे सोच-विचार में डूबा हुआ,और दुविधा में धंसा-

सा। बहरहाल मार्था ही अब एक ऐसी वस्तु है जो उसे बहुत पसन्द है। वह अपनी सोने की घड़ी निकालता है और चुपचाप लाइफ गार्ड को दे देता है, जो कि कान से लगाकर सुनता है।]

लाइफ गार्ड : चल तो रही है। (**सिर पर पानी वाला टोप पहनकर चला जाता है**)

[ईवान एन्तोनोव लड़खड़ाता और निचुड़ा सा नीचे सिर झुकाए रोमन बाथ के किनारे जो कुछ भी हुआ उसके बारे में सोचता चल रहा है। कभी-कभी लाइफ गार्ड की तरफ भी देखता है। लाइफ गार्ड चला जाता है। सोचते-सोचते एन्तोनोव कमरे के अन्त में जहां मार्था है पहुंच जाता है। वहां मार्था एक किताब फेंककर मारती है जो कि एन्तोनोव होशियारी से लपक लेता है। इसी प्रकार मार्था एक, दो, तीन, चार·····किताबे फेंकती है]

मार्था : ये है, ये···ये···ये ?

ईवान एन्तोनोव : नहीं। यह नहीं है और ना ही वो—और ना वो। अरे रुक जाओ, तुम तो मुझे कुचल डालोगी। (**मुसकराता है**)

[इस समय एन्तोनोव लगभग एक दर्जन किताबों से लद चुका है जिन्हें मार्था ने फेंका था। मार्था खुद भी किताबों से लदी हुई आती है और एन्तोनोव के ऊपर लाद देती है और···और उसे प्यार करती है।

दोनों प्यार करते हैं। ईवान के हाथ किताबों से भरे हैं। इसी समय एम० ए० रसोई के दरवाज़े पर दिखाई देता है। वह दुखी भाव से आश्चर्यचकित सा रह जाता है]

एम० ए० : मार्था !

[दोनों अलग हटते हैं, घबराये से, फिर एन्तोनोव किताबें जमीन पर डाल देता है और मार्था को गले से लगाकर चूमता है]

मार्था : मेरी आंखों के सामने·····

ईवान एन्तोनोव : तो, मत देखो।

एम० ए० : मुझसे ऐसे बात मत करो, तुमसे फिर कभी निपटूंगा। मैंने तुमसे कई बार कहा है कि मेरे रास्ते में मत आओ।

ईवान एन्तोनोव : मुझे याद है। तुमने कहा था कि तुम मुझे कुचल दोगे। तभी से मैं यह सोचता आ रहा हूं कि देश की माली हालत को देखते हुए तुम्हें स्टीम रोलर की तरह ठीक से इस्तेमाल नहीं किया जा रहा है।

मार्था : क्या चाहते हो ?

एम० ए० : ये सब तुम कैसे·····ठीक मेरी आंखों के सामने·····उसके साथ·····

मार्था : तुम्हें इस बात का जवाब कैसे चाहिए— लिखकर या जबानी !

एम० ए० : मार्था···!!!

ईवान एन्तोनोव : मैं वह किताब ढूंढ़ने जा रहा हूं (**जाता है**)

[जब एम० ए० आया था उसके आधा सैकन्ड पहले लाइफ गार्ड अपनी तैराकी

टोपी पहने मीनार पर चढ़कर अपनी दूर-बीन से देख रहा था। इसी समय एम० ए० दाखिल हुआ था। अब लाइफ गार्ड इन दोनों के दृश्य को दूरबीन से देख रहा है। ईवान एन्तोनोव कहीं फर्नीचर में घुसा पड़ा है और वह उस किताब को ढूंढ़ रहा है जिसके लिए वह और मार्था आये थे]

मार्था : तुम्हें कुछ और पूछना है? क्या तुम्हारे मतलब की कुछ और चीज है जिसे तुम नहीं समझ पाये हो?

एम० ए० : (**बेरुखी से**) मैं सोचता था कि तुम मुझसे प्यार करती थीं—चाहे थोड़ा ही सही!

मार्था : वाकई?

एम० ए० : तुम यहां हो···मेरे दिल में···

मार्था : वहां तो यह रोमन बाथ है।

एम० ए० : तुम हो!

मार्था : दो लोग वहां नहीं रह सकते।

एम० ए० : (**थोड़ा सोचकर**) तुम चाहती हो कि मैं यह सब छोड़ दूं।

मार्था : (**उसकी ओर देखकर**) हां।

एम० ए० : इस रोमन बाथ को, अपने भाषणों को? सब कुछ?

मार्था : हां—तब मैं तुम्हारा यकीन करूंगी।

[ईवान एन्तोनोव घूमकर बैठा इन्हें ही देख रहा है। दिमाग पर बोझा-सा लिये। बड़े सोच-विचार के क्षण। एम० ए० तेजी

से सोच रहा है और कुछ ही क्षणों में निश्चय कर लेता है]

एम० ए० : क्या यह समझदारी का काम होगा ?

मार्था : बिल्कुल नहीं। औरत के लिए सब कुछ छोड़ देना तो सिर्फ फिल्मों में दिखाया जाता है।

एम० ए० : मार्था,जायज बात करो···रोमन बाथ न सिर्फ मेरी किस्मत का, बल्कि तुम्हारी किस्मत का भी फैसला कर देगा।···रोमन बाथ पर लिखी गई तकरीरें, तुम्हें ज्यादा सुख देंगी बनिस्बत एक आदमी के, ऐसा आदमी जो कि फर्नीचरों के बीच रेंग रहा है। मैं रोमन बाथ क्यों छोड़ूं ? आजकल के आदमियों की तरह क्या हम, जो दूसरों के रास्ते में आता है, उसे रोक नहीं सकते, उल्टे और···

मार्था : मत छोड़ो इसे। जाओ और खोदो। मैं तुम्हारी जिन्दगी बरबाद करने नहीं आई थी, मैं ईवान एन्तोनोव के साथ आई थी।

एम० ए० : ईवान एन्तोनोव के साथ ! इस ईवान एन्तोनोव का नाम सुनते ही···वह आदमी जो कि फिलिस्तीनी छापामार-सा बना हुआ है, जो सिर्फ एक ही बात जानता है—मेरा घर मुझे वापस दो—मुझे घर वापस दो, जिसके दिल में कला के लिए, साइन्स के लिए या और कोई ऊंचे ख्यालों के लिए कोई गुन्जाइश नहीं। वह सिर्फ अपना घर चाहता है—रहने के लिए, एक सादा जिन्दगी बिताने के लिए।

ईवान एन्तोनोव : तुमसे कहा गया था कि तुम जाओ और खोदो, कहा था ना ?

एम० ए० : और तुम इसके साथ गुलछर्रे उड़ाओ।

मार्था : तुम मेरी फिक्र मत करो। बहुत देर हो चुकी है।

एम० ए० : तुम समझती हो कि वो तुम्हें कुछ दे सकता है? कभी कुछ नहीं करेगा। कभी नहीं। तुम्हारे पास रहने के लिए घर भी नहीं होगा। उसको ये घर कभी वापस नहीं मिलेगा,सवाल ही, पैदा नहीं होता, मैं इसको पूरी तरह से खोद डालूंगा···उसके पास पैसा भी नहीं है, मुझे मालूम है कि···

मार्था : हां, नहीं है।

ईवान एन्तोनोव : उहूं ! बिल्कुल नहीं।

एम० ए० : मार्था ! तुम बरबाद हो जाओगी। सोसाइटी में रहने के काबिल नहीं रहोगी, जैसे कि एम० ए० की बीवी बनकर रह सकती थीं।

[इसी बीच ईवान एन्तोनोव जिस किताब को ढूंढ़ रहा है मिल जाती है।]

ईवान एन्तोनोव : यह रही, मुझे मिल गई।

मार्था : **(उसकी तरफ मुड़कर)** वाह ! वाह !! **(प्यार करती है।)**

एम० ए० : तो इसका मतलब ये कि तुम अक्सर मिलते रहे हो अक्सर···।

[दोनों एम० ए० की तरफ कोई ध्यान नहीं देते, किताब के पन्ने पलटते हैं, उस पर बात-चीत करते हैं·····इसी समय लाइफ गार्ड

जो अभी तक सिर पर टोप पहने हुए और आंखों पर दूरबीन लगाये देख रहा था, बोल पड़ता है।]

सेकोव : **(वास्तव में ये सेकोव है, जो कि लाइफ गार्ड की पोशाक में है)** एन्टोनोव ! एन्टोनोव !!

मार्था : ये कौन है ?

सेकोव : **(सिर से टोपी हटाता है। और अपना चेहरा बेनकाब कर देता है।)** कुछ लमहे मुझको दोगे?**(मीनार के ऊपर से कूदता है और ईवान एन्तोनोव और मार्था के पास आता है)**

ईवान एन्तोनोव : नहीं, मैं वक्त नहीं दे सकता। मैं बहुत मशगूल हूं।

सेकोव : एन्तोनोव ! तुम अपनी जिन्दगी का सुनहरा मौका हाथ से खो रहे हो।

ईवान एन्तोनोव : आज से मुझे किसी चीज की फिक्र नहीं है।

सेकोव : भले आदमी, होश में आओ। पांच लाख का मामला है जितनी भी औरतें चाहोगे मिलेंगी ···कार और सब कुछ···एक औरत के लिए इसे मत छोड़ो·····।

ईवान एन्तोनोव : इसका जिक्र मत करो **(रोमन बाथ के किनारे-किनारे चलने लगता है।)**

सेकोव : **(रोमन बाथ के अन्दर कूद पड़ता है,एन्तोनोव का पजामा पकड़ लेता है)** एन्तोनोव !!

एन्तोनोव : तुम देख रहे हो मैं कितना मशगूल हूं। मुझे क्यों परेशान कर रहे हो ?

सेकोव : **(इधर-उधर देखकर)** क्योंकि अब वक्त नहीं है। यही मौका है, अगर तुमने कोई फैसला

नहीं किया तो सब बेकार हो जायेगा। मेरे आदमी बाहरी मुल्कों में अगले हफ्ते तिजारत के लिए चले जायेंगे। फिर हम इसे एक्सपोर्ट नहीं कर पायेंगे।

ईवान एन्तोनोव : **(सेकोव से बचता हुआ, आगे बढ़ता है।)** तुम एक आदमी को उसकी महबूबा का प्यार भी नहीं लेने देते। **(सेकोव छेद में भीतर-ही-भीतर गायब हो जाता है (एक-दूसरे छेद से झांकता है जहां ईवान एन्तोनोव एवं मार्था खडे हैं।)**

एम० ए० : इस महबूबा के चक्कर में तेरे कपड़े भी बिक जायेंगे।

सेकोव : **(छेद में से आधा धड़ बाहर निकाल कर)** अच्छा ठीक है हम इसको भी साथ ले चलेंगे। लेकिन और ज्यादा देर मत करो।

मार्था : लेकिन ये आदमी कौन है ?

सेकोव : एन्तोनोव, वक्त पैसे से भी ज्यादा कीमती होता है।

लाइफ गार्ड : **(इसी समय आता है और सेकोव को छेद में से देखता है)** क्या यह डूब रहा है ? **(सेकोव छिप जाता है)** ये डूब रहा है। **(छेद में कूद पड़ता है। साला ! मेरी रोजी-रोटी छीनना चाहता है।)**

[वह सेकोव पर झपटता है दोनों में लुका-छिपी होने लगती है। पहले एक छेद से निकलते हैं फिर घुस जाते हैं फिर निकलते हैं]

एम० ए० : तो तुम अपना काम दूसरों की महबूबाओं को पटाकर चलाते हो।

ईवान एन्तोनोव : हममें बूता है, इसलिए करते हैं।

मार्था : इससे मत लड़ो। हमारा आपस में समझौता हो चुका है, है ना? (**एम० ए० से**) जाओ। टट्टी तुम्हारा इन्तजार कर रही है। जाओ, और धो दो।

एम० ए० : नीच औरत·····।

ईवान एन्तोनोव : (**जाकेट के बटन खोलते** हुए) मेरा ख्याल है फैसला कर ही डालूं।

[एम० ए० भी अपनी जाकेट के बटन खोलता है, फिर यह सोचकर कि लड़ना बेकार है, आगे बढ़ जाता है। ईवान एन्तोनोव और मार्था चलने लगते हैं लेकिन दायमनदीव जो कि जमीनों की खरीदो-फरोख़्त का दलाल है, एक छेद में से कूद कर बाहर आता है।]

दायमनदीव : कैसे हैं! मैं अपनी पावर आफ एटार्नी के लिए आया हूं।

ईवान एन्तोनोव : कैसी पावर आफ एटार्नी? अच्छा, हां, घर की।

दायमनदीव : गाहक पीछे पड़ा हुआ है। उसने रकम बढ़ा दी है। मैं इन लोगों के सामने बात नहीं करना चाहता, लेकिन रक़म बहुत मोटी है। यह जवान औरत कौन है?

ईवान एन्तोनोव : मेरी महबूबा।

दायमनदीव : (**एक ओर**) एक खूबसूरत औरत। फिर मैं इसके सामने बात कर सकता हूं।

ईवान एन्तोनोव : बिल्कुल वैसे ही जैसे कि तुम मुझसे बात कर रहे हो।

[इसी समय सेकोव एक दूसरे छेद से बाहर आता है और बातें सुनने लगता है। लाइफ गार्ड, जो उसका पीछा कर रहा है, जोरों से सीटी बजाता है और सेकोव भागकर दूसरे छेद में छिप जाता है। लाइफ गार्ड उसके पीछे कदता है और आंखों से ओझल हो जाता है।]

दायमनदीव : ये लोग क्या उछल-कूद कर रहे हैं ?

ईवान एन्तोनोव : कुदरत के मासूम बच्चे हैं। लुका-छिपी खेल रहे हैं।

दायमनदीव : मैंने वकील ढूंढ़ लिये हैं। खर्राट—सब-के-सब। हमें तरकीब से काम करना होगा—तुम्हें मेरे गाहक को गोद लेना होगा।

ईवान एन्तोनोव : किसको ?

दायमनदीव : मेरे गाहक को।

ईवान एन्तोनोव : क्या उम्र है उसकी ?

दायमनदीव : उनसठ साल, लेकिन उससे कोई फरक नहीं पड़ता।

मार्था : मैं इतने बुड्ढे को अपना बेटा बनाऊंगी।

ईवान एन्तोनोव : लेकिन मेरा ख्याल था कि गोद लेने के लिए उम्र सिर्फ.....

दायमनदीव : वह मुझ पर छोड़ दो। मैंने तो अस्सी साल तक के बूढ़ों को गोद दिलवाया है।

ईवान एन्तोनोव : क्या कह रहे·····

दायमनदीव : इससे परेशान मत हो। यह तो मामूली कानूनी चालें हैं, बहुत सीधी-साधी। वरना हम मकान उसे नहीं बेच सकते। ये रहे फार्म, तुम इन्हें भर दो और फिर सौदा आगे बढ़ेगा।

ईवान एन्तोनोव : नहीं। इससे काम नहीं चलेगा।

[वह मार्था के साथ चलने लगता है। पीछे-पीछे दायमनदीव है। पावर आफ एटार्नी अपने ब्रीफकेस में से हाथ में निकाल रखी है। सेकोव और लाइफ गार्ड, एन्तोनोव और मार्था के आगे-पीछे एक-दूसरे को पकड़ने के लिए दौड़ रहे हैं। कमरे में चारों तरफ गड़बड़ी फैली है। ईवान एन्तोनोव समझ नहीं पा रहा कि वह मार्था को लेकर कमरे में किस तरफ जाये, वो सोच-विचार में पड़ जाते हैं·····लाइफ गार्ड सेकोव को पकड़ने वाला ही होता है कि सेकोव सीढ़ियों से मचान पर चढ़ जाता है। इसी समय गेचेव की आवाज़ सुनाई देती है]

गेचेव : आइये, आइये, यहां आइये। इस तरफ, इस तरफ·····

[गेचेव, जो स्थानीय संगठन का सदस्य है, कमरे में तीन व्यक्तियों के साथ, जो नये सूट पहने हैं और जिनके हाथ में काले रंग के ब्रीफकेस हैं, कमरे में आते हैं। ये ही कमेटी है]

गेचेव : इस तरफ, कामरेड, इस तरफ। होशियारी से, यहां बड़े-बड़े छेद हैं।

[कमेटी इधर-उधर देखकर ठीक रोमन बाथ के सामने आकर खड़ी हो जाती है]

यह है हमारे स्थानीय संगठन की शानदार कामयाबी।

[इसी समय एम० ए० रसोई से आकर आश्चर्य से खड़ा हो जाता है]

हमारे सदस्यों की मेहनत, मशक्कत और काम में तरतीब की ही वजह से पौम्पीलियनस के जमाने का अकेला यह रोमन बाथ खोज निकाला गया है। यह नायाब तवारीखी इमारत टेलीविजन पर भी दिखाई गई थी। यह खुशी की बात है कि यह हमारे संगठन की जमीन पर ही पाया गया है और दूसरे संगठनों की नहीं। यहां इस जगह पर हम जलसे और कान्फ्रेन्स करेंगे। गरीबों के लिए चन्दा इकट्ठा करेंगे। हम बड़े-बड़े मजदूर-नेताओं से बात करेंगे। यहां पर हफ्ते में एक बार आवाम की तकलीफें सुना करेंगे। हम यहां बेगाटेल भी मेज डालकर खेल सकते हैं। यहां इस ताल में हम हजारों तैराकियों को तैरना सिखा सकते हैं, यही आज की आवाज़ है। विश्व-खेलों में तैराकियों को दस पदक जीतने हैं—और हमने अपने पिछले इजलास में यही फैसला किया है कि दस में से

कम-से-कम आठ हमारे संगठन के लोग ही जीतेंगे।

[ईवान और मार्था रोमन बाथ के किनारे खड़े हैं। उनके पीछे एम० ए० है। उनके सामने दायमनदीव ब्रीफकेस लिये खड़ा है। लाइफ गार्ड जीने पर खड़ा है। मीनार पर सेकोव मुंह लटकाये खड़ा सामने की तरफ देख रहा है]

गेचेव : ये हैं कामरेड एन्तोनोव ! यह यहीं रोमन बाथ के बराबर में ही रहते हैं। हमारे अच्छे मैम्बर हैं जो ठीक वक्त पर हिसाब चुका देते हैं और ये हर मौके पर हुकूमत की मदद करते हैं। **(कमेटी ईवान एन्तोनोव को इस प्रकार देखते हैं जैसे कि कुछ देर पहले वह रोमन बाथ को देख रही थी।)** पहला बहादुर जो हमारी गत्ता मिल के लिए रद्दी बटोरता है। **(मार्था की ओर संकेत करते हुए।)** ये इनकी पत्नी हैं, हाल ही में हमारी स्थानीय संगठन में तबादले पर आई हैं। **(एम० ए० की ओर)** ये रोमन बाथ में नल वग़ैरा की मरम्मत करता है, मुफ्त। **(एम० ए० नाराज़गी में बैठ जाता है। दायमनदीव से परिचय कराते हुए)** ये इनका मददगार है। इन्हें तनख्वाह दी जाती है। **(सेकोव से परिचय कराते हुए)** ये हमारे स्थानीय संगठन की जान है। इन्होंने अपनी जिन्दगी संगठन के लिए कुर्बान कर रक्खी है, ये नारेबाजी और

मशहूरी का काम करते हैं। और दूसरी सजावट के काम भी।

(सेकोव डर के मारे दांत पीसता है।)

[कमेटी चल देती है, आगे-आगे गेचेव। उनके जाने के बाद कुछ देर शान्ति है। अचानक तूफान भड़क उठता है—सब ईवान एन्तोनोव की तरफ जूझ पड़ते हैं]

एम० ए० : रोमन बाथ में बेगाटेल का खेल ! एन्तोनोव, तुम जवाब दो।

सेकोव : आवाम की अदालत क्यों ? आवाम की अदालत क्या है ?यहां क्या करेगी वो ? एन्तोनोव, तुमने वायदा किया था !

[उनके चिल्लाने पर एन्तोनोव ताल में घुस जाता है]

ईवान एन्तोनोव : मैंने कोई वायदा नहीं किया।

दायमनदीव : ये बेहूदे इजलास क्यों ? वह किस चन्दे की बात कर रहा था ? उसे कानूनन क्या हक़ है। मैं पूछता हूं उन्हें कानूनी हक़ क्या है।

ईवान एन्तोनोव : मुझे नहीं मालूम।

लाइफ गार्ड : वह किन जवान लोगों की बात कर रहा था। बेवकूफी। एक हज़ार नौजवान तैराक़। यहां एक बूंद पानी तक नहीं है।

सेकोव : मैंने पैसे खर्च किये हैं, मैंने बदनामी झेली है।

ईवान एन्तोनोव : या तो हमें जाने दो, या·····आओ हम चलें।

(ईवान एन्तोनोव के पीछे हमाम में जाता है)

कोई कहीं नहीं जायेगा। गाहक इन्तजार कर

रहा है। तीन वकील इन्तजार कर रहे हैं। यह बाप है—इसे-उसे गोद लेना पड़ेगा।

सेकोव : मैंने भी बेइज़्ज़ती झेली है। मुझे संगठन की जान बताया गया है। मैं ऐसे ही नहीं छोड़ दूंगा।

एम० ए० : यह जंगलीपन है। इस रद्दी बटोरने वाले को सही जगह पर पहुंचाना होगा।

[सब ईवान एन्तोनोव को घेर लेते हैं, जो कि ताल में है, और उसके सिर पर झुके खड़े चिल्ला रहे हैं]

दायमनदीव : मुझे पावर आफ एटार्नी दो। बच्चा इन्तजार कर रहा है।

एम० ए० : मैंने रोमन बाथ की खोज की है।

लाइफ गार्ड : मेरा एपायन्टमैन्ट लैटर मेरी जेब में है।

(जेब थपथपाता है)

सेकोव : मेरे आदमी बाहर चले जायेंगे। या तो अभी इसी वक़्त या कभी नहीं।

दायमनदीव : यह बाप है, इसे गोद लेना होगा।

लाइफ गार्ड : तुम लाइफ गार्ड की अहमियत को कम क्यों समझते हो ?

एम० ए० : इसे चाहिए। ये मेरी महबूबा वापस करे।

सेकोव : इसे बाहर भेज दो।

[ईवान उनकी तरफ देखता है। फिर चिल्लाता है, 'बस' फिर कुदाली उठाता है जोकि रोमन बाथ में पड़ी है, और अपने सिर पर रगड़ कर चमकाता है। सब शांत

हैं। कमरे में शान्ति है। फिर सब चिल्लाते हैं]

सब साथ : नहीं·····न···हीं···।

सेकोव : तहजीब के बारे में सोचो।

एम० ए० : नस्ले इन्सानी के बारे में सोचो।

लाइफ गार्ड : जिस्मानी ताकत के बारे में सोचो।

दायमनदीव : अपने बेटे के बारे में सोचो।

गेचेव : (**कमरे में दाखिल होते हुए**) स्थानीय संगठन के बारे में सोचो।

गूंगा-बहरा : (**जो कि गेचेव के साथ ही आता है**) गूंगे-बहरों के बारे में सोचो।

[ईवान उनकी तरफ फिर देखता है, मार्था की तरफ देखता है और कुदाली अपने सिर से ऊपर उठाता है। फिर सब ताल में कूद पड़ते हैं और अपने जिस्म से उसे ढांक देते हैं। ईवान वहीं पर कुदाली सिर से ऊपर उठाये खड़ा है। कुछ क्षण। फिर वह कुदाली धीरे-धीरे नीचे करता है और व्यंग-पूर्ण दृष्टि से देखकर कुदाली एम० ए० को थमा देता है। जीने पर चढ़ता है— चलता है और दीवार से घड़ी उतारता है। घड़ी लेता है और वापस आता है। ताल पर पड़े तख्ते को पार करता है। अन्य सब लोग ताल में हैं सिवाय मार्था के। वह ऊपर है। एन्तोनोव दायमनदीव की तरफ देखकर मुस्कराता है, हाथ से इशारा करता है, "मुझे दस्तखत करने हैं!" आगे

बढ़ जाता है, तैराकी की नकल उतारता है, लेकिन धीरे से, सिर्फ इशारा करता है, गेचेव के हाव-भाव उतारता है, मार्था को बाहों में भरकर दोनों चल देते हैं। वे चले जाते हैं, सब ताल के अन्दर ही रह जाते हैं। मंच पार करते हैं और अचानक कॉलम बोल पड़ता है]

कॉलम : एन्तोनोव ! एन्तोनोव !!

ईवान एन्तोनोव : धीरे-धीरे, मार्था। हां !

कॉलम : पैदल क्यों ? देखो ना कितनी टैक्सी हैं वहां मुफ्त।

ईवान एन्तोनोव : वहां हैं ? लेकिन अब हम तो काफी नजदीक आ चुके हैं।

कॉलम : नज़दीक कहां ?

ईवान एन्तोनोव : (**दर्शकों की ओर देखकर**) यहां, लोगों के बीच।

[वह और मार्था मंच पर सामने सीढ़ियों पर आते हैं और दर्शकों को प्रणाम करते हैं।]

□□